अक्तूबर, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 10

www.indiatibet.net

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

करुणा वर्ष

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

अक्तूबर, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 9

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित
तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचारों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा

नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

पैनल चर्चा के दौरान

समाचार -

समाचार -

Contents

०१. परम पावन दलाई लामा ने ऑस्ट्रेलियन-तिब्बतन नेशनल एसोसिएशन, तिब्बती कम्युनिटीज यूरोप और तिब्बती यूथ कांग्रेस द्वारा आयोजित दीर्घायु प्रार्थना में भाग लिया 2
०२. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २९वें फोरम- २००० के दूसरे दिन 'चीन: कहां जाकर रुकेगा?' पैनल चर्चा में बीज भाषण दिया 3
०३. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने बर्लिन में जर्मन सांसदों और तिब्बत समर्थकों के साथ बातचीत की 4
०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री साने ताकाइची को बधाई दी 4
०५. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने महात्मा गांधी की १५६वीं जयंती मनाई 5
०६. उपसभापति डोल्मा शेरिंग तेखांग ने जापानी सांसद सदायुकी कोमोरी से मुलाकात की 5
०७. धर्मशाला स्थित तिब्बती बस्ती कार्यालय ने एकेडमिक वर्ल्ड स्कूल के छात्रों से निर्वासित तिब्बती समुदाय का परिचय कराया 6
०८. नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में मिशन जॉय की 'करुणा वर्ष' फिल्म की स्क्रीनिंग 6
०९. तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान निमंत्रण पर ताइवान का दौरा करेगा 7
११. आईटीसीओ और सीजीटीसी-आई ने संयुक्त रूप से कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया और तिब्बत समर्थन समूह के अध्यक्षों की बैठक बुलाई 9
१२. पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी नामक्यी ने तिब्बत में मानवाधिकारों की बिगड़ती स्थिति पर अमेरिकी कांग्रेस में अपने विचार रखे 10
१३. धर्मशाला में मन की प्रकृति और एआई के वादे और चुनौतियों पर विचार करने के लिए १२० से ज्यादा विशेषज्ञ इकट्ठा हुए 10
१४. 'थेरवाद और महायान' डॉयलॉग पर कॉन्फ्रेंस की पांचवीं शृंखला नई दिल्ली में 12
१५. सेंट्रल टीबी डिवीजन की मेडिकल टीम ने स्वास्थ्य विभाग का दौरा किया 13
१६. संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने वियतनामी हिरासत में तिब्बती लामा तुल्कु हुंगकर दोरजे रिनपोछे की मौत पर चिंता जताई 13
१७. यूरोपीय संसद ने ४२वीं ईयू-चीन अंतर संसदीय बैठक में पंचेन लामा की बिना शर्त रिहाई की मांग की 14
१८. मठ से मशीन तक: तिब्बती आस्था और पहचान पर चीन का सांस्कृतिक हमला 14
१९. चीन ने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के बाहर सबसे बड़े मठ में दलाई लामा की तस्वीरों पर छापा मारा 16
२०. आत्मदाह करने वाली तिब्बती शहीद की याद- तेनजिन वांग्मो 16

अपनी बात

तिब्बती निर्वाचन आयोग द्वारा आगामी चुनाव–प्रक्रिया का शुभारम्भ

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

समस्त तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों के साथ विष्व के सभी लो. कतांत्रिक संगठनों और विचारकों के लिये प्रसन्नता का विषय है कि निर्वासित तिब्बत सरकार में राज्याध्यक्ष–षासनाध्यक्ष अर्थात् सिक्योंग एवं संसदीय निर्वाचन हेतु प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है। यह चुनावी प्रक्रिया वर्ष 2025–26 में चुनावी आचार संहिता के लागू होते ही शुरू हो गई है। चुनाव का प्रारंभिक चरण 01 फरवरी, 2026 को जबकि अंतिम चरण 26 अप्रैल, 2026 को सम्पन्न होगा। तिब्बती संविधान के अनुरूप तिब्बती निर्वाचन आयोग के आयुक्त तथा दोनों अतिरिक्त आयुक्तों ने इसी अक्टूबर, 2025 में चुनाव संबंधी आवष्यक प्रक्रियाओं, तिथियों, नियमों एवं आचार संहिता की घोषणा कर दी है। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं विष्वसनीय चुनाव प्रक्रिया का संचालन तिब्बती निर्वाचन आयोग का महत्वपूर्ण संवैधानिक दायित्व है। अपने दायित्व के निर्वहन में यह सदैव सफल रहा है। इस बार भी इसे पूर्णतः सफलता मिलेगी, ऐसी आषा की जानी चाहिये।

तिब्बती निर्वाचन आयोग के आयुक्त तथा दोनों अतिरिक्त आयुक्त व्यवस्थित रूप से तिब्बती मतदाताओं को जागरूक कर रहे हैं। उनके मतानुसार मतदाताओं को जागरूक करने से ही मतदान प्रतिषत बढ़ेगा तथा चुनावी प्रक्रिया में लोगों की अधिकाधिक भ. ागीदारी बढ़ेगी। लोग तभी अपने मताधिकार के महत्व को भलीभ. ाँति समझेंगे। निर्वाचन आयोग का दायित्व है कि वह निर्वाचन से जुड़ी सभी आवष्यक व्यवस्था करे। इस आवष्यक व्यवस्था में सक्षम प्रषासनिक तंत्र एवं चुनाव सामग्री के साथ जागरूकता अभियान भी शामिल है। इससे प्रमाणित होता है कि तिब्बती निर्वाचन आयोग अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी निभाने में जी जान से लगा है।

निर्वासित तिब्बत सरकार में लोकतांत्रिक तरीके से वयस्क मताधिकार के आधार पर निर्वाचन की व्यवस्था तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा की देन है। वर्तमान चौदहवें दलाई लामा स्वतंत्र तिब्बत के राज्याध्यक्ष एवं शासनाध्यक्ष थे। साथ ही धर्माध्यक्ष भी थे। जब विस्तारवादी चीन ने सन् 1959 में स्वतंत्र तिब्बत पर अवैध नियंत्रण कर लिया तब दलाई लामा ने हजारों तिब्बतियों के साथ भारत में शरण ली। वे भारत को तिब्बत का ''गुरु'' तथा तिब्बत को भारत का ''चेला'' कहते हैं क्योंकि भारत से ही बौद्ध दर्षन तिब्बत पहुँचा था। वे इसीलिये भारत को अपना दूसरा घर भी कहते हैं। भारत–तिब्बत के इसी आध्यात्मिक–सांस्कृतिक संबंध के कारण उन्होंने भारत को ही शरण लेने के लिये चुना था जबकि तत्कालीन भारतीय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने तथाकथित भारत–चीन संबंध मजबूत करने के लिये स्वतंत्र तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग मान लिया था। उन्होंने स्वतंत्र तिब्बत पर अवैध चीनी आधिपत्य का विरोध नहीं किया था। सरदार पटेल, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, जयप्रकाष नारायण, डॉ. अंबेडकर एवं डॉ. लोहिया समेत अनेक भारतीय राजनेताओं एवं चिंतकों की सलाह की उन्होंने उपेक्षा की थी जिसका तात्कालिक दुष्परिणाम यह निकला कि ''भारत–तिब्बत सीमा'' की जगह ''भा. रत–चीन सीमा'' अस्तित्व में आ गई। इसका दीर्घकालिक दुष्परिणाम यह है कि चीन सरकार आज भी भारत विरोधी गतिविधियों में संलग्न है।

भारतीय संसदीय प्रणाली और निर्वाचन व्यवस्था से दलाई लामा बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने इसी के फलस्वरूप निर्वासित तिब्बती समाज के लोकतंत्रीकरण पर जोर दिया। उन्हीं के प्रयासों से विष्वभर में फैले तिब्बती अपनी सरकार एवं संसद का निर्वाचन करते आ रहे हैं। दलाई लामा अपने सभी राजनैतिक अधिकार एवं कार्य जनता द्वारा निर्वाचित तिब्बत सरकार को सौंप चुके हैं। उन्होंने अपने आप को सिर्फ आध्यात्मिक कार्यों तक सीमित कर लिया है।

अपने समस्त राजनैतिक अधिकार निर्वाचित सरकार को सौंपने तथा तिब्बती समाज में लोकतांत्रिक आदर्षों को मजबूत करने से दलाई लामा के प्रति लोगों का सम्मानपूर्ण विष्वास लगातार बढ़ता जा रहा है। अभी अक्टूबर, 2025 में तिब्बती समाज एवं अन्य तिब्बत समर्थकों ने उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन हेतु परंपरागत पूजा–प्रार्थना की है। वयोवृद्ध दलाई लामा भी धर्मषाला के इस कार्यक्रम में शामिल थे। हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला में ही उनका निवास है तथा वहीं से निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि वास्तव में लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार है, का संचालन होता है। इस परंपरागत पूजा एवं प्रार्थना में दलाई लामा ने आष्वस्त किया कि वे लंबे समय तक जीवित रहेंगे तथा अपने दायित्व निभाते रहेंगे।

दलाई लामा अपने चार वैष्विक संकल्पों के प्रति समर्पित हैं। वे व्यक्ति होने के नाते शांति, अहिंसा आदि मानवीय मूल्यों को मजबूत करते हैं। बौद्ध धर्मगुरु होने के कारण वे सभी पंथों (मजहब, रि. लिजन, संप्रदाय, मत) में सद्भाव बढ़ाते हैं। तिब्बती होने के चलते वे तिब्बत समस्या के शीघ्र समाधान हेतु ''मध्यममार्ग'' की बात करते हैं जिसके अनुसार चीन की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता के अंतर्गत ही तिब्बत को ''वास्तविक स्वायत्तता'' मिल जाये। चौथा सं. कल्प है प्राचीन भारत की नालंदा परंपरा का व्यापक प्रचार–प्रसार।

तिब्बत सरकार के सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग ने अक्टूबर माह में अपनी चेक गणराज्य, जर्मनी, कनाडा एवं अमरीका की यात्रा में पाया कि विष्वजनमत मध्यममार्ग नीति के अनुरूप तिब्बती समस्या के समाधान हेतु विस्तारवादी चीन सरकार पर अधिकाधिक दबाव बढ़ाने की दिषा में गतिषील है। सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग की बातें सभी देषों में वहाँ के जनप्रतिनिधियों, सांसदों, मीडियाकर्मियों, प्रषासकों, राजनयिकों तथा नीतिनिर्धारकों एवं विचारकों द्वारा गंभीरतापूर्वक सुनी गईं। तिब्बत में चीन सरकार की अमानवीय एवं अलोकतांत्रिक क्रूरतापूर्ण गतिविधि से सभी व्यथित थे। उनका मत था कि तिब्बत समस्या के समाधान से सम्पूर्ण विष्व में शांति, सद्भाव एवं विकास का वातावरण मजबूत होगा।

◆ ०१. परम पावन दलाई लामा ने ऑस्ट्रेलियन-तिब्बतन नेशनल एसोसिएशन, तिब्बती कम्युनिटीज यूरोप और तिब्बती यूथ कांग्रेस द्वारा आयोजित दीर्घायु प्रार्थना में भाग लिया

०८ अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। कई दिनों की लगातार बारिश के बाद आज ०८ अक्तूबर की सुबह धर्मशाला के पीछे बर्फ की चादर ओढ़े पहाड़ सूरज की रोशनी में चांदी सा चमक रहे थे। परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु प्रार्थना करने वाले संगठनों के प्रतिनिधियों ने उनके निवास स्थान के गेट पर अगवानी की और मुख्य तिब्बती मंदिर सुगलाखंग तक लेकर गए। इस यात्रा में परम पावन के आगे सजे-धजे नर्तक ड्रम बजाते हुए और बिगुल बजाते हुए भिक्षु चल रहे थे। दीर्घायु प्रार्थना करने वाले संगठनों में ऑस्ट्रेलियन तिब्बतन नेशनल एसोसिएशन, तिब्बती कम्युनिटीज यूरोप और तिब्बती यूथ कांग्रेस शामिल थे।

परम पावन एक गोल्फ-कार्ट से प्रांगण से होते हुए गलियारे में धीरे-धीरे आगे बढ़े और लिफ्ट तक पहुंचकर मंदिर में चले गए। उस समय जाते हुए परम पावन मुस्कुराए और हाथ हिलाकर भीड़ में मौजूद लोगों का अभिवादन स्वीकार किया।

मंदिर में परम पावन ने मुख्य गुरु समदोंग रिनपोछे के सामने का आसन ग्रहण किया और रिनपोछे की बाईं ओर नामग्याल मठ के मठाधीश थोमटोग रिनपोछे और ग्युटो मठ के मठाधीश बैठे, जबकि रिनपोछे की दाईं ओर जोनांग ग्यालत्सब रिनपोछे, नामग्याल मठ के लोबपोन, लोसांग धारगेय और नामग्याल मठ के गेशे बैठे।

आज की दीर्घायु प्रार्थना अमिताभ बुद्ध पर आधारित थी और इसमें पांच समूहों में डाकिनियों को बुलाना और उन्हें प्रसाद चढ़ाना शामिल था। इस बीच, वहां मौजूद सभी लोगों को चाय और खीर परोसे गए।

समदोंग रिनपोछे ने परम पावन को दीर्घ आयु की तीर भेंट की, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। एक ही श्लोक में सात-अंगों वाली प्रार्थना करने के बाद परम पावन को 'सोंग' भेंट किया गया, जिसमें से उन्होंने थोड़ा सा हिस्सा लिया। इसके बाद परम पावन द्वारा दिलगो ख्येंते रिनपोछे के अनुरोध पर रचित एक-श्लोक वाली निम्नलिखित दीर्घायु प्रार्थना की गई।

आप शून्यता और करुणा को मिलाने वाले रास्ते को और भी साफ बनाते हैं

हे तिब्बत की बर्फीली भूमि में शिक्षाओं और जीवों के भगवान

कमल धारण करने वाले आप तेनजिन ग्यात्सो के लिए

हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी सभी इच्छाएं अपने आप पूरी हों!

समदोंग रिनपोछे और आज की प्रार्थनाओं के संरक्षकों और आयोजकों के प्रतिनिधियों ने बुद्ध के मन, वचन, कर्म का प्रतीक एक मंडल इस सच्ची प्रार्थना के साथ अर्पित किया कि परम पावन १०० युगों-युगों तक जीवित रहें। परम पावन ने दीर्घायु कलश से अमृत की एक बूंद अपने हाथ में ली और दूसरी बूंद समदोंग रिनपोछे के हाथ में रखी। इस समय उन्हें दीर्घायु की गोलियां भेंट की गईं। इसके बाद सात शाही प्रतीकों, आठ शुभ प्रतीकों और आठ शुभ पदार्थों की प्रस्तुति वाली थालियां उन्हें भेंट की गईं।

इस समय आयोजक समूहों के प्रतिनिधियों का एक जुलूस मंदिर से गुजरा, उन्होंने अपने साथ लाई बुद्ध की मूर्तियां, भिक्षुओं के वस्त्र आदि भेंट प्रस्तुत किए और परम पावन का आशीर्वाद प्राप्त किया।

'सर्वोच्च विजेता और सर्वज्ञ परम पावन चौदहवें दलाई लामा की दीर्घायु के लिए प्रार्थना- 'अमरता के अमृत की धुन' का पाठ किया गया, जो इस प्रकार है:

आप शून्यता और करुणा को मिलाने वाले रास्ते को और भी साफ बनाते हैं

हे तिब्बत की बर्फीली भूमि में शिक्षाओं और जीवों के भगवान

कमल धारण करने वाले आप तेनजिन ग्यात्सो के लिए

हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी सभी इच्छाएं अपने आप पूरी हों!

समधोंग रिनपोछे और आज की प्रार्थनाओं के संरक्षकों और आयोजकों के प्रतिनिधियों ने एक मंडल और बुद्ध के शरीर, वाणी और मन की प्रस्तुतियाँ इस सच्ची प्रार्थना के साथ अर्पित कीं कि परम पावन १०० युगों तक जीवित रहें। परम पावन ने दीर्घायु कलश से अपने हाथ में अमृत की एक बूंद ली और दूसरी बूंद समधोंग रिनपोछे के हाथ में रखी। दीर्घायु की गोलियाँ भेंट की गईं। इसके बाद सात शाही प्रतीकों, आठ शुभ प्रतीकों और आठ शुभ पदार्थों की प्रस्तुतियाँ वाली थालियाँ भेंट की गईं।

आयोजक समूहों के सदस्यों का एक जुलूस मंदिर से गुजरा, उन्होंने अपने साथ लाई गई भेंटें, जैसे बुद्ध की मूर्तियाँ, भिक्षुओं के वस्त्र आदि प्रस्तुत किए, और परम पावन का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सर्वोच्च विजेता और सर्वज्ञ परम पावन चौदहवें दलाई लामा की दीर्घायु के लिए प्रार्थना- 'अमरता के अमृत की धुन' का पाठ किया गया, जिसे जामयांग ख्येनत्से चोकी लोद्रो ने लिखा है। वह इस प्रकार है:

जब तक यह धरती, मेरु पर्वत, सूरज और चांद रहेंगे,

आप अपने वज्र सिंहासन पर सुरक्षित, अजेय रहें,

दिव्य पोटाला पैलेस में, अवलोकितेश्वर की खुशी में,

आपका गुप्त शरीर, वाणी और मन हमेशा अपरिवर्तनीय रहे!

लंबी उम्र के तीन सर्वोच्च देवताओं की कृपा से,

और गुरुओं, यिदामों, बुद्धों और बोधिसत्वों की सच्चाई की शक्ति से,

हमने जो कुछ भी प्रार्थना की है, वह सब सफल हो

और बिना किसी बाधा के पूरी हो!

इसके बाद परम पावन दलाई लामा की लंबी उम्र के लिए उनके दो गुरुओं द्वारा की गई विस्तृत 'अमरता का गीत- प्रार्थना' हुई, जिसमें इन पंक्तियों को कोरस की तरह गाया गया:

हम आपको पूरी भक्ति के साथ प्रार्थनाएं अर्पित करते हैं:

कि बर्फ की भूमि के रक्षक, तेनजिन ग्यात्सो, युगों-युगों तक जीवित रहें।

उन पर अपना आशीर्वाद बरसाएं

ताकि उनकी सभी इच्छाएं निर्बाध पूरी हों।

इसके बाद एक भावपूर्ण प्रस्तुति हुई, जब मंदिर के पीछे तीन गायकों ने वहां उपस्थित लोगों के साथ तिब्बती गीत- 'हे सावई लामा, मेरे प्यारे मूल गुरु' गाया। इस गीत को शेरिंग ग्यूरमे द्वारा लोकप्रिय बनाया गया है। इस आयोजन में मंदिर के चारों ओर और नीचे आंगन में मौजूद लोग उत्सुकता से शामिल हुए।

हे मेरे मूल गुरु आपकी पवित्रता, विजयी तेनजिन ग्यात्सो-

तिब्बती लोगों और सभी जीवित प्राणियों की भलाई के लिए

आपने कृपा करके आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों जिम्मेदारियां उठाई हैं।

एक या दो साल में, खुशी का चमकता सूरज एक बार फिर उगे।

जब खुशी की वह रोशनी फैलेगी,

तो हम अपनी प्यारी मातृभूमि लौट आएंगे।

पवित्र पोटाला पैलेस में, वापस लौटने पर,

हम विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करेंगे -

हमें अनंत काल तक आपसे मिलने का आशीर्वाद दें।

यह गीत 'बोड ग्यालो- तिब्बत की जीत' उद्घोष के साथ समाप्त हुआ।

इसके बाद दुर्भाग्य और बुरी शक्तियों से उबरने में मदद करने का अनुरोध करते हुए गुरु पद्मसंभव का आह्वान किया गया। तत्पश्चात् परम पावन की दीर्घायु पर आभार व्यक्त करने के लिए एक धन्यवाद मंडल चढ़ाया गया।

समारोह के निर्विघ्न समापन पर आयोजक मंडली ने 'बुद्ध की गैर-सांप्रदायिक शिक्षाओं की समृद्धि के लिए- ऋषि के सत्य का सामंजस्यपूर्ण गीत- नामक प्रार्थना' का पाठ किया। यह प्रार्थना परम पावन ने लिखी थी। इसमें कुल दो छंद इस प्रकार हैं:

जो भी मुझे देखे, मेरी आवाज सुने, मेरे बारे में सोचे या मुझ पर भरोसा करे,

उन्हें सबसे शानदार खुशी और पुण्य का अनुभव हो!

और जो लोग मेरा अपमान करते हैं, मुझे सजा देते हैं, मारते हैं या मेरी बुराई करते हैं,

उन्हें भी जागृति के मार्ग पर चलने का सौभाग्य मिले!

संक्षेप में, जब तक अंतरिक्ष रहेगा,

और जब तक प्राणियों में दुख रहेगा,

मैं भी तब तक रहूं, ताकि उन्हें लाभ और खुशी दे सकूं,

हर तरह से, सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से भी!

इसके बाद 'सत्य वचन की प्रार्थना' और जागृत मन की समृद्धि के लिए प्रार्थना का पाठ इस प्रकार किया गया:

कीमती, सर्वोच्च जागृत मन

उन लोगों में उत्पन्न हो, जिनमें यह अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ है;

और जहां यह उत्पन्न हो गया है, वहां यह कम न हो

बल्कि हमेशा और बढ़ता रहे।

परम पावन मंदिर से बाहर निकले और आंगन में गए, जहां वे गोल्फ-कार्ट में बैठ गए। जब भिक्षु पारंपरिक सींग वाद्य यंत्र बजाते हुए आगे बढ़ रहे थे और परम पावन मुस्कुराते हुए और हाथ हिलाते हुए आंगन पार कर रहे थे, तभी भीड़ ने सहज रूप से और खुशी-खुशी एक बार फिर 'त्सावई लामा' गाना शुरू कर दिया।

◆ ०२. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २९वें फोरम-२००० के दूसरे दिन 'चीन: कहां जाकर रुकेगा?' पैनल चर्चा में बीज भाषण दिया

१४ अक्टूबर, २०२५

प्राग (चेक गणराज्य)। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने चेक गणराज्य की राजधानी प्राग के वैक्लाव हावेल हॉल में आयोजित २९वें फोरम- २००० सम्मेलन के दूसरे दिन १३ अक्टूबर को भाग लिया। इसकी अध्यक्षता चेक गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम पेट्र पावेल और जॉर्जिया के पांचवें राष्ट्रपति महामहिम सलोमे जौराबिचविली ने की।

सम्मेलन सत्र के बाद सिक्योंग ने चेक टीवी 'नोवा' को दिए साक्षात्कार में तिब्बत के स्थायी भू-राजनीतिक और पर्यावरणीय महत्व के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने तिब्बत को एशिया की प्रमुख नदियों का स्रोत बताया और इस बारे में तिब्बत की महती भूमिका, इसकी पारिस्थितिकीय नाजुकता और इसके प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर

बल दिया कि कैसे ये तत्व तिब्बत को एशिया की पर्यावरणीय सुरक्षा की दृष्टि से अहम बनाते हैं। सिक्योंग ने आगे तिब्बत की बौद्ध परंपरा में निहित गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर विचार रखे और इस बात पर बल दिया कि तिब्बती भाषा का सुनियोजित विनाश सीधे तौर पर तिब्बती बौद्ध धर्म के संरक्षण और विस्तार के लिए, तो वृहत रूप से तिब्बती लोगों की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान के लिए खतरा है।

दोपहर में, सिक्योंग ने ग्लोबल साउथ के राजनेताओं के साथ भोजन के समय बातचीत की। इस दौरान वैश्विक लोकतांत्रिक लचीलेपन, ग्लोबल साउथ में शामिल देशों की मौजूदा राजनीतिक स्थितियों और वहां पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के बढ़ते प्रभाव पर विचार- विमर्श किया गया। यह विचार- विमर्श अनौपचारिक लेकिन सार्थक रहा।

इसके बाद, सिक्योंग ने साशा न्यूमैन से मुलाकात की, जिन्होंने अपनी हाल में प्रकाशित पुस्तक- दलाई लामा - हावेल - प्राहा' भेट की। यह पुस्तक १९९० में परम पावन दलाई लामा की चेक यात्रा और राष्ट्रपति वैक्लाव हावेल के साथ उनकी गहन मित्रता की फोटोग्राफिक प्रस्तुति है। इसके बाद चेक गणराज्य के विदेश उप मंत्री जी कोजाक और फोरम २००० फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक जैकब क्लेपल के साथ उन्होंने अलग-अलग बैठकें कीं।

उसी दिन बाद में, सिक्योंग ने वैक्लाव हावेल हॉल में 'चीन: कहां जाकर रुकेगा?' शीर्षक से आयोजित पैनल चर्चा में मुख्य वक्ताओं में से एक के रूप में बीज भाषण लिया। इस समारोह के अन्य प्रतिष्ठित पैनलिस्टों में अमेरिकी विदेश विभाग के पूर्व अधिकारी मार्क लैम्बर्ट, ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के दा ची लाओ, चीन पर अंतर-संसदीय गठबंधन (आईपीएसी) के जापान निदेशक शिओरी यामाओ, विजिटिंग स्कॉलर एमेका लकी और हडसन इंस्टीट्यूट में वरिष्ठ फेलो जेमी फ्लाई शामिल थे। चर्चा में चीन की बढ़ती अधिनायकवादी प्रवृत्ति और वैश्विक व्यवस्था पर इसके प्रभावों की पड़ताल की गई।

सिक्योंग ने दिन के कार्यक्रमों के समापन के बाद ग्लोबल नेटवर्किंग डिनर में भाग लिया। इस डिनर के अवसर पर दुनिया भर के नेता, सांसद और लोकतंत्र के पैरोकार साझा लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा में संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एकत्र हुए।

◆ ०३. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने बर्लिन में जर्मन सांसदों और तिब्बत समर्थकों के साथ बातचीत की

१९ अक्तूबर, २०२५

बर्लिन (जर्मनी)। सिक्योंगे पेन्पा शेरिंग ने १७ अक्टूबर २०२५ को जर्मन संसदीय समूह के अध्यक्ष सांसद माइकल ब्रांड, जर्मन बुंडेस्टाग के सदस्य कार्स्टन मुलर और सुजैन हियरल, इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) जर्मनी के काई मुलर, श्वार्ज-शिलिंग फाउंडेशन की मैनुएला मैंगोल्ड और तिब्बत इनिशिएटिव ड्यूशलैंड के सदस्यों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में सिक्योंग ने तिब्बत के अंदर और निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों की मौजूदा स्थिति का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने तिब्बत की अनूठी सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विरासत को संरक्षित करने के लिए तिब्बती समुदाय के ठोस प्रयासों को रेखांकित किया, विशेष रूप से दुनिया भर के लगभग सभी तिब्बती समुदायों में सप्ताहांत तिब्बती कक्षाओं के संचालन पर प्रकाश डाला। ये पहल न केवल युवा पीढ़ी को तिब्बती भाषा सीखने में सक्षम बनाती हैं, बल्कि पारंपरिक संगीत, नृत्य और गीत का प्रशिक्षण भी देती हैं, जिससे तिब्बत की सांस्कृतिक पहचान की निरंतरता और जीवंतता सुनिश्चित होती है।

सिक्योंग ने दलाई लामा परंपरा की निरंतरता के संबंध में परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा हाल ही में की गई घोषणा का भी जिक्र किया और तिब्बती लोगों के लिए इसके गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर बल दिया।

बैठक में जिनेवा स्थित तिब्बत ब्यूरो के प्रतिनिधि थिनले चुक्की भी शामिल रहीं। तिब्बत और तिब्बती लोगों के लंबे समय से और दृढ़ समर्थक सांसद माइकल ब्रांड के साथ बुंडेस्टाग के दो सदस्य भी शामिल हुए, जिन्होंने पीआरसी द्वारा चीनीकरण की तीव्र नीतियों के बीच तिब्बतियों की वर्तमान दुर्दशा को गहराई से समझने में वास्तविक रुचि और प्रतिबद्धता व्यक्त की। बैठक तिब्बती मुद्दे के प्रति जर्मन सरकार और सांसदों से निरंतर और संवर्धित समर्थन के लिए विचारों का पता लगाने में उपयोगी साबित हुई।

◆ ०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री साने ताकाइची को बधाई दी

२३ अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती जनता की ओर से जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में पद ग्रहण करने पर साने ताकाइची को हार्दिक बधाई दी। सिक्योंग ने जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में उनकी ऐतिहासिक उपलब्धि की सराहना की।

अपने संदेश में, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दिवंगत प्रधानमंत्री शिंजो आबे के तिब्बती आंदोलन के प्रति निरंतर समर्थन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और जापान-तिब्बत संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में प्रधानमंत्री ताकाइची की निरंतर

प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। सिक्योंग ने लिखा, 'तिब्बत में बुनियादी स्वतंत्रताओं के उल्लंघन की निंदा करने वाले आपके स्पष्ट बयान और तिब्बतियों के अधिकारों की रक्षा के लिए आपके निरंतर आह्वान आपके अनुकरणीय नैतिक साहस को दर्शाते हैं। आपके समर्थन ने इस वर्ष जापान में आयोजित तिब्बत पर विश्व सांसदों के नौवें सम्मेलन की सफलता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके लिए हम आप सबके प्रति अत्यंत आभारी हैं।'

'जैपनीज पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत (तिब्बत के लिए जापानी संसदीय समर्थक समूह)' दुनिया के सबसे बड़े और सबसे सक्रिय समूहों में से एक है, जो जापान के सर्वदलीय सांसदों की गहरी करुणा और नैतिक दृढ़ विश्वास का प्रतीक है। ऐसी एकजुटता तिब्बती लोगों के लचीलेपन को बनाए रखती है और निर्वासन में हमारे लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करती है।'

सिक्योंग ने लिखा, 'जैसे-जैसे आप जापान को एक नए युग में ले जा रहे हैं, हमें विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में, जापान और तिब्बत के बीच मित्रता और गहरी होगी और जापान तिब्बत के साथ खड़ा रहेगा और उसे अपना समर्थन देता रहेगा।'

सिक्योंग ने प्रार्थनाओं के साथ बधाई पत्र का समापन किया और उनकी निरंतर सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं।

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) का नेतृवर्ग और उसके वरिष्ठ अधिकारी आज ०२ अक्तूबर २०२५ को गांधी जयंती की १५६वीं वर्षगांठ मनाने के लिए गंगचेन क्यिशोंग में एकत्रित हुए और अहिंसा के पुजारी, नागरिक अधिकारों और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रख्यात नेता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस कार्यक्रम का नेतृत्व १६वें कशाग की ओर से कार्यवाहक सिक्योंग ग्यारी डोल्मा ने किया।

इस समारोह में तिब्बती मुख्य न्यायिक आयुक्त येशी वांगमो, स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, सुरक्षा विभाग की कार्यवाहक सिक्योंग कालोन (मंत्री) डोल्मा ग्यारी, तिब्बती न्यायिक आयुक्त दावा फुनकी और फग्पा शेरिंग, चुनाव आयुक्त लोबसांग येशी, महालेखा परीक्षक ताशी तोपग्याल, अतिरिक्त चुनाव आयुक्त शेरिंग यूडन, सांसद धोंडुप ताशी और शेरिंग यांगचेन तथा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित हुए।

समारोह की शुरुआत महात्मा गांधी के चित्र के समक्ष घी का दीपक और पुष्प अर्पित करने के साथ हुई। मीडिया को संबोधित करते हुए, कार्यवाहक सिक्योंग डोल्मा ग्यारी ने तिब्बती संघर्ष में गांधी के सत्य और अहिंसा के दर्शन की निरंतर प्रासंगिकता पर जोर दिया।

कार्यवाहक सिक्योंग डोल्मा ग्यारी ने कहा, 'आज, भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर हम तिब्बती, विशेषकर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन, भारत के लोगों के साथ मिलकर उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। सत्य और अहिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करने का गांधीजी का तरीका हमारे लिए एक पथ प्रदर्शक बना हुआ है।'

उन्होंने कहा कि तिब्बती भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रति गहरा सम्मान रखते हैं। गांधीजी के मार्ग पर चलते हुए, परम पावन दलाई लामा ने अहिंसा और शांति के माध्यम से तिब्बती स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया है। जहां दुनिया भर में कई संघर्ष सशस्त्र प्रतिरोध का सहारा लेते हैं, वहीं तिब्बती लोगों ने परम पावन के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर अपने चार्टर में अपने संघर्ष को केवल शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीकों से आगे बढ़ाने की दृढ़ प्रतिबद्धता को प्रतिष्ठित किया है, जिससे हम एक अद्वितीय समुदाय बन गए हैं।

उन्होंने अंत में कहा, 'हम तिब्बतियों का भारत के प्रति गहरा स्नेह है। हम प्रार्थना करते हैं कि भारत दुनिया में शक्तिशाली और अनुकरणीय राष्ट्र के रूप में विकसित होता रहे।'

◆ ०६. उपसभापति डोल्मा शेरिंग तेखांग ने जापानी सांसद सदायुकी कोमोरी से मुलाकात की

२० अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। जापान के ओसाका स्थित ताकासुकी नगर की सांसद सदायुकी कोमोरी ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग से मुलाकात की।

मुलाकात के दौरान डिप्टी स्पीकर ने सांसद कोमोरी को तिब्बत की गंभीर स्थिति, तिब्बती लोकतंत्र के विकास और निर्वासित तिब्बती संसद के कामकाज के बारे में जानकारी दी। उन्होंने उनकी यात्रा के महत्व पर जोर दिया और बुद्ध की शिक्षाओं में निहित करुणा और दया के साझा मूल्यों का उल्लेख किया जो तिब्बतियों और जापानियों को आपस में जोड़ते हैं। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक संरक्षण और धार्मिक आदान-प्रदान जैसे क्षेत्रों में दोनों समुदायों के बीच गहरे सहयोग की आशा व्यक्त की।

डिप्टी स्पीकर ने इस बात पर प्रकाश डाला कि निर्वासन में जाने के बाद १९६७ में परम पावन दलाई लामा की पहली विदेश यात्रा जापान की थी। उन्होंने इस वर्ष की शुरुआत में टोक्यो में आयोजित तिब्बत पर विश्व सांसदों के नौवें सम्मेलन का भी उल्लेख किया। उन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए जापान के दीर्घकालिक समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया और कहा कि 'जैपनीज पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत (तिब्बत के लिए जापान संसदीय समर्थक समूह)' दुनिया में तिब्बत के लिए सबसे बड़ा संसदीय समर्थक समूह बना हुआ है।

तिब्बत के भीतर चल रहे संकट पर बात करते हुए डिप्टी स्पीकर ने तिब्बती धर्म, भाषा और संस्कृति के पालन पर बढ़ते प्रतिबंधों और तिब्बत के साथ खड़े होने के लिए और अधिक अंतरराष्ट्रीय आवाजों की तत्काल आवश्यकता पर बात की। उन्होंने कहा, 'हम चीनी लोगों के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की उन नीतियों के खिलाफ हैं, जो तिब्बतियों को आत्मदाह के लिए प्रेरित कर रही हैं।'

उन्होंने आगे चीनी सरकार द्वारा तिब्बत के नाजुक पर्यावरण के विनाश की ओर ध्यान आकर्षित किया और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आग्रह किया कि वह चीन के साथ व्यापार के दौरान मानवाधिकारों के उल्लंघन और पर्यावरण विनाश के लिए उसे जवाबदेह ठहराए।

सांसद कोमोरी ने बताया कि परम पावन दलाई लामा जापान में उनके स्कूल में कई बार आ चुके हैं और तिब्बत उनके हृदय में हमेशा से एक विशेष स्थान रखता है, जिसने उन्हें धर्मशाला आने के लिए प्रेरित किया।

अंत में, डिप्टी स्पीकर ने सांसद कोमोरी को पारंपरिक तिब्बती स्कार्फ और स्मृति चिन्ह भेंट कीं। इसके बाद उन्हें संसद भवन का भ्रमण कराया गया।

- प्रस्तुति : तिब्बती संसदीय सचिवालय

◆ ०७. धर्मशाला स्थित तिब्बती बस्ती कार्यालय ने एकेडमिक वर्ल्ड स्कूल के छात्रों से निर्वासित तिब्बती समुदाय का परिचय कराया

१३ अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। आज १३ अक्तूबर की सुबह धर्मशाला स्थित तिब्बती बस्ती कार्यालय ने बस्ती के सामुदायिक भवन में एकेडमिक वर्ल्ड स्कूल, छत्तीसगढ़ के ८० छात्रों और संकाय सदस्यों के एक समूह की अगवानी की और छात्रों को निर्वासित तिब्बती समुदाय से परिचित कराया।

शैक्षिक दौरे पर धर्मशाला आए छात्रों और संकाय सदस्यों को संबोधित करते हुए तिब्बती बस्ती अधिकारी कुंचोक मिग्मर ने तिब्बती स्वतंत्रता संग्राम, निर्वासित जीवन, तिब्बती लोकतांत्रिक व्यवस्था की कार्यप्रणाली और भारत और तिब्बत के बीच दीर्घकालिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने पिछले छह दशकों में तिब्बती समुदाय के प्रति उदार आतिथ्य और अटूट समर्थन के लिए भारत सरकार और भारत की जनता के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

बस्ती अधिकारी कुंचोक मिग्मर ने कहा, 'हम परम पावन १४वें दलाई लामा की ९०वीं जयंती को 'करुणा वर्ष' के रूप में मना रहे हैं, इसलिए हमने छात्रों और शिक्षकों को अपनी कृतज्ञता के एक छोटे से प्रतीक के रूप में डायरी पुस्तकें भेंट कीं।'

-तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, धर्मशाला की प्रस्तुति

◆ ०८. नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में मिशन जॉय की 'करुणा वर्ष' फिल्म की स्क्रीनिंग

०७ अक्तूबर, २०२५

नॉर्थम्प्टन (मैसाचुसेट्स)। मैसाचुसेट्स क्षेत्रीय तिब्बती संघ (आरटीएएम) ने परम पावन महान १४वें दलाई लामा की ९०वीं जयंती से एक साल तक 'करुणा वर्ष (२०२५-२०२६)' मनाने की पहल के तहत ०४ अक्टूबर, २०२५ को नॉर्थम्प्टन के एकेडमी ऑफ म्यूजिक थिएटर में 'मिशन जॉय-संकटग्रस्त समय में खुशी की खोज' की विशेष स्क्रीनिंग की।

इस कार्यक्रम में स्थानीय नेताओं, तिब्बती समुदाय, स्थानीय निवासियों, मैसाचुसेट्स एमहर्स्ट विश्वविद्यालय, एमहर्स्ट कॉलेज और स्मिथ कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों सहित ५०० से अधिक लोग एकत्रित हुए। इस स्क्रीनिंग का उद्देश्य परम पावन और दिवंगत आर्कबिशप डेसमंड टूटू की असाधारण मित्रता के माध्यम से परम पावन के शांति, करुणा और सार्वभौमिक उत्तरदायित्व के संदेश को साझा करना था।

कार्यक्रम में नॉर्थम्प्टन की मेयर जीना-लुईस सियारा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं और उन्होंने तिब्बती समुदाय द्वारा समझ और करुणा को बढ़ावा देने के प्रयासों की सराहना की। उत्तरी अमेरिका का प्रतिनिधित्व करने वाली निर्वासित तिब्बती संसद की सदस्य थोंडुप शेरिंग मुख्य अतिथि थीं और उन्होंने बीज भाषण दिया।

अपने भाषण में, चिथुए थोंडुप शेरिंग ने जुलाई २०२५ में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा शुरू की गई करुणा वर्ष पहल के वैश्विक महत्व को उजागर किया। उन्होंने मैसाचुसेट्स स्टेट हाउस में हुए उद्घाटन समारोह को याद

किया, जिसमें मैसाचुसेट्स सीनेट और हाउस के ९० सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित एक विधायी प्रस्ताव पर परम पावन के जीवन और विरासत का सम्मान किया गया था।

फिल्म का परिचय देते हुए उन्होंने कहा, 'मिशन जॉय परम पावन दलाई लामा और आर्कबिशप टूटू की हंसी, ज्ञान और मानवता को खूबसूरती से दर्शाता है। उनकी दोस्ती हमें सिखाती है कि आनंद और करुणा विलासिता नहीं, बल्कि हमारे समय में शांति के लिए आवश्यक हैं।' अकादमी पुरस्कार विजेता लुई साइहोयोस और सह-निर्देशक पैगी कैलाहन द्वारा निर्देशित यह फिल्म इस बात की पड़ताल करती है कि कैसे आनंद व्यक्तिगत और वैश्विक चुनौतियों के बीच भी लचीलेपन का अभ्यास बन सकता है

नॉर्थम्प्टन में प्रदर्शित फिल्म ने आनंद, सहानुभूति और साझा मानवता पर संवाद और चिंतन को बढ़ावा देकर करुणा वर्ष के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया। यह परम पावन दलाई लामा के वैश्विक संदेश का एक सार्थक अनुस्मारक साबित हुई कि सच्चा सुख दूसरों के प्रति करुणा और सेवा से उत्पन्न होता है।

मैसाचुसेट्स क्षेत्रीय तिब्बती संघ करुणा वर्ष की चल रही पहल के तहत आने वाले महीनों में फोटो प्रदर्शनियों, सामुदायिक संवादों और युवाओं तक पहुंच सहित कार्यक्रमों का आयोजन जारी रखने की योजना बना रहा है।

- प्रस्तुति: तिब्बती संसदीय सचिवालय

◆ ०९. तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान निमंत्रण पर ताइवान का दौरा करेगा

०८ अक्तूबर, २०२५

ताइपे, ०४ अक्तूबर, २०२५। तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टिपा) ताइवान के संस्कृति मंत्रालय, तिब्बत ताइवान कार्यालय और ताइवानी बौद्ध केंद्र के संयुक्त निमंत्रण पर ताइवान के सांस्कृतिक दौरे पर निकला है। २७ सितंबर से १५ अक्तूबर तक के इस दौरे का उद्देश्य ताइवानी दर्शकों के लिए तिब्बत की जीवंत और अनूठी सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करना है।

निदेशक धोंडुप शेरिंग के नेतृत्व में टिपा १८ सदस्यीय कलाकार मंडल २५ सितंबर को धर्मशाला से रवाना हुआ और २७ सितंबर को ताइवान पहुंचा। इस मंडल में कलात्मक निदेशक, प्रशिक्षक, संगीतकार और कलाकार शामिल हैं। इस समूह का हवाई अड्डे पर संस्कृति मंत्रालय, तिब्बत कार्यालय और ताइवान तिब्बती संघ के प्रतिनिधियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

ताइवान के संस्कृति मंत्रालय ने २७ सितंबर से ०७ अक्तूबर तक प्रदर्शनों और आवासों का आयोजन किया। टिपा ने अपने निर्धारित प्रदर्शनों से पहले ध्वनि, प्रकाश-व्यवस्था और मंच-व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए पूर्वाभ्यास किए।

टीपा ने ३० सितंबर को ताइपे स्थित ताइवान पारंपरिक रंगमंच केंद्र में अपना पहला बड़ा प्रदर्शन किया।

ताइवानी मीडिया ने दोपहर के कार्यक्रम में भाग लिया, जिसके बाद सांस्कृतिक केंद्र मंत्रालय के निदेशक काओ यू चेन ने भाषण दिया और टिपा के निदेशक धुंडुप शेरिंग के साथ एक साक्षात्कार हुआ।

शाम के कार्यक्रम में अधिकारियों, गणमान्य सांस्कृतिक हस्तियों और तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधियों सहित ९०० से अधिक अतिथियों ने थिएटर को भर दिया। एक प्रसिद्ध ताइवानी एमसी द्वारा आयोजित इस प्रदर्शन में ९० मिनट के प्रदर्शन में तिब्बती लोकगीत, पारंपरिक नृत्य, ढोल वादन और ओपेरा प्रस्तुत किए गए। शाम का समापन मित्रता और सांस्कृतिक एकजुटता के प्रतीक के रूप में औपचारिक स्कार्फ आदान-प्रदान के साथ हुआ।

टिपा ने ०१ अक्तूबर को फिर से खचाखच भरे हॉल में प्रदर्शन किया। टिपा का २०१८ के बाद से यह पहला ताइवान दौरा था। इस कार्यक्रम ने व्यापक मीडिया का ध्यान आकर्षित किया, तिब्बत की सांस्कृतिक समृद्धि पर प्रकाश डाला और ताइवानी और तिब्बती समुदायों के बीच संबंधों को मजबूत किया। अगला कार्यक्रम ०४ अक्तूबर को हुआलिएन काउंटी में और ०६ अक्तूबर को चियाई शहर में होगा।

०८ अक्तूबर से १५ अक्तूबर तक टिपा तिब्बत कार्यालय और ताइवान भर के तिब्बती बौद्ध केंद्रों के साथ सहयोग करेगा। प्रदर्शनों के साथ-साथ, समूह परम पावन दलाई लामा की चार प्रतिबद्धताओं पर व्याख्यान भी प्रस्तुत करेगा, जिससे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदान-प्रदान गहरा होगा।

इस दौरे को ताइवानी समाचार पत्रों और मीडिया संस्थानों में पहले ही काफी कवरेज मिल चुका है, जिससे पूरे ताइवान में तिब्बत की परंपराओं और मूल्यों की व्यापक समझ को बढ़ावा देने में मदद मिली है।

- प्रस्तुति : तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान

१०. तबि्बती अध्ययन पर सातवां युवा भारतीय वद्वित सम्मेलन धर्मशाला में

०८ अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। तिब्बती पढ़ने वाले युवाओं विद्वानों का दो दिवसीय सातवां युवा भारतीय विद्वत सम्मेलन आज ०८ अक्तूबर २०२५ की सुबह प्रशासनिक तिब्बती कल्याण सोसायटी (एटीडब्ल्यूएस) हॉल में शुरू हुआ। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के तौर पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग उपस्थित थे।

उद्घाटन समारोह का संचालन सम्मेलन समन्वयक डॉ. शेरिंग डोल्मा ने किया, जिसके बाद तिब्बत नीति संस्थान (टीपीआई) के उप निदेशक टेम्पा ग्यालत्सेन जम्ल्हा ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने मुख्य अतिथि और सभी प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए बताया कि दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान, विद्वान तिब्बत के इतिहास, संस्कृति, पर्यावरण, भू-राजनीति और भारत-तिब्बत संबंधों पर शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन भारत में युवा विद्वानों के लिए तिब्बती अध्ययन पर विचारों का आदान-प्रदान करने और अकादमिक चर्चा में शामिल होने के

लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

सम्मेलन का आधिकारिक उद्घाटन सिक्योंग पेन्पा शेरिंग के संबोधन से हुआ, जिन्होंने युवा भारतीय शोधकर्ताओं के बीच तिब्बती अध्ययन को आगे बढ़ाने में अकादमिक जुड़ाव और विद्वानों के संवाद के महत्व पर जोर दिया। सम्मेलन आयोजित करने के लिए तिब्बत नीति संस्थान की सराहना करते हुए सिक्योंग ने बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और तिब्बत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भू-राजनीतिक महत्व की गहरी समझ को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका की प्रशंसा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अकादमिक अनुसंधान तिब्बत के बारे में अफवाहों का मुकाबला करने और इसके इतिहास की सच्चाई को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अपने संबोधन में सिक्योंग ने मध्यम मार्ग नीति के विकास के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने समझाया कि चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जे के बाद निर्वासन में तिब्बतियों ने शुरू में १९५९ से १९७४ तक स्वतंत्रता संघर्ष चलाया। हालांकि, परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती नेतृत्व ने बाद में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के ढांचे के भीतर वास्तविक स्वायत्तता की मांग करते हुए मध्यम मार्ग नीति को अपनाया। इस दृष्टिकोण को निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीआईई) द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया था, और यह केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की आधिकारिक नीति बनी हुई है।

एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति को मजबूत करने को लेकर सीटीए के नए रणनीति की पुष्टि करते हुए सिक्योंग ने बताया कि इस दृष्टिकोण का उद्देश्य परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा प्रस्तावित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण की वैधता और नैतिक नींव को मजबूत करना है। उन्होंने सीटीए के पॉलिटिकल रुख के दो मुख्य आधारों पर जोर दिया। पहला, तिब्बत की ऐतिहासिक आजादी और दूसरा, दमनकारी शासन के तहत पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना द्वारा तिब्बत पर लगातार कब्जा।

सिक्योंग ने कहा, 'जब परम पावन दलाई लामा मध्यम मार्ग दृष्टिकोण की बात करते हैं, तो यह एक शांतिपूर्ण समाधान की अपील है- एक ऐसा समाधान जो न तो अलगाव चाहता है और न ही मौजूदा दमन को स्वीकार करता है। हालांकि, बीजिंग के लगातार इनकार और जवाब न देने के कारण, हमें तिब्बत की पिछली आजादी को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाकर अपनी स्थिति की वैधता को मजबूत करना होगा।'

उन्होंने आगे कहा कि दुनिया भर की सरकारों, गैर सरकारी संगठनों और संसदीय पक्षधरता निकायों के साथ आधिकारिक मुलाकातों के दौरान, सीटीए लगातार तिब्बत के अंदर बिगड़ते मानवाधिकारों की स्थिति के बारे में जागरूकता फैलाता है। उन्होंने कहा कि इन कोशिशों का मकसद यह पक्का करना है कि तिब्बत के बारे में हमेशा अंतरराष्ट्रीय बिरादरी की चिंता और नैतिक जिम्मेदारी बनी रहे।

अमेरिकी कांग्रेस (संसद) द्वारा पारित किए गए और पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा कानून बनाए गए रिजॉल्व तिब्बत ऐक्ट के बारे में सिक्योंग ने जोर देकर कहा कि यह कानून चीन के इस झूठे दावे को खारिज करता है कि तिब्बत प्राचीन काल से चीन का हिस्सा रहा है। उन्होंने दोहराया कि परम पावन दलाई लामा ने कभी भी इस तरह की बात को स्वीकार नहीं किया है और अमेरिकी सरकार भी इसे नहीं मानती है। उन्होंने समझाया कि यह ऐक्ट तिब्बत के इतिहास पर चीन के गलत प्रचार का मुकाबला करने के लिए समान सोच वाले देशों के साथ सहयोग करने का भी आग्रह करता है और तिब्बत की क्षेत्रीय स्थिति को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है, जिसमें तीनों पारंपरिक प्रांत - यू-सांग, खाम और अमदो शामिल हैं। उन्होंने इस बिल को हाउस और सीनेट दोनों से पास कराने में किए गए बड़े प्रयास को स्वीकार किया।

सिक्योंग ने तिब्बत और यूक्रेन के बीच समानता की ओर भी ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा कि दुनिया आज यूक्रेन में जो देख रही है, वह कुछ वैसा ही है जैसा ७० साल से भी पहले तिब्बत के साथ हुआ था। उन्होंने कहा, 'तिब्बत पर हमला किया गया, कब्जा किया गया और १९५१ में दबाव में १७-सूत्रीय समझौता पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गयौ जो अंतरराष्ट्रीय कानून का साफ उल्लंघन था।

उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत के इतिहास को राजनीतिक मकसद के लिए तोड़ने-मरोड़ने की चीन की लगातार कोशिशों को देखते हुए मध्यम मार्ग दृष्टिकोण को ऐतिहासिक सच्चाई का समर्थन मिलना चाहिए। उन्होंने कहा, 'हमने चीन सरकार को साफ-साफ संदेश भेजा है- 'इतिहास को ताकत से नहीं बदला जा सकता। तिब्बत हमेशा से आजाद देश रहा है। हमारे अतीत की सच्चाई को राजनीतिक एजेंडे या मिलिट्री कब्जे से मिटाया नहीं जा सकता।'

सिक्योंग ने अमेरिकी काउंसिल के अधिकारियों के साथ अपनी बातचीत और चीन और तिब्बती धार्मिक संस्थानों से जुड़े जटिल भू-राजनीतिक समीकरणों पर भी बात की। उन्होंने कहा कि जहां चीन तिब्बती बौद्ध धर्म का राजनीतिकरण करना चाहता है, वहीं यह परंपरा खुद आध्यात्मिक सिद्धांतों में निहित है, जो राजनीतिक नियंत्रण से परे हैं। उन्होंने तिब्बती पुनर्जन्म की अवधारणा के बारे में फैलाई जा रही गलतफहमियों को दूर करने और अंतरराष्ट्रीय बिरादरी को इसके पीछे के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को समझाने में मदद करने के महत्व पर जोर दिया।

अंत में, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने युवा विद्वानों से तिब्बती धर्म, संस्कृति और इतिहास पर गहन शोध करने और अपने ज्ञान को और बढ़ाने का आग्रह किया और इस बात पर जोर दिया कि उनके अकादमिक योगदान से तिब्बत की ऐतिहासिक स्वतंत्रता के बारे में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समक्ष तथ्यात्मक साक्ष्य प्रस्तुत करने में मदद मिल सकती है। उन्होंने वैश्विक समुदाय से मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का समर्थन करने और तिब्बती लोगों के साथ वास्तविक स्वायत्तता और उनकी पहचान के संरक्षण के शांतिपूर्ण संघर्ष में एकजुटता से खड़े होने का आह्वान किया।

इसके बाद, सम्मेलन को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली ने संबोधित किया और तिब्बत को प्रभावित करने वाली व्यापक भू-राजनीतिक और शैक्षणिक चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

प्रोफेसर श्रीकांत ने व्यापार, निवेश, पर्यटन और अन्य रियायतों के माध्यम से चीन के बढ़ते प्रभाव का उल्लेख किया, जिसने उसके घरेलू नियंत्रण और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को मजबूत किया है। उन्होंने २९ अगस्त २०२० को तिब्बत फोरम में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के संबोधन सहित ऐतिहासिक और हालिया घटनाक्रमों का हवाला दिया।

उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि चीनी सरकार ने बौद्ध ग्रंथों में बदलाव करके और धार्मिक रिवाजों को नया रूप देकर तिब्बती बौद्ध धर्म को 'चीनी बौद्ध धर्म बनाने की कोशिश की है। औपनिवेशिक स्कूली शिक्षा, तिब्बती समुदायों को सीमित रखने और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के साथ-साथ चीनी नीति का उद्देश्य चीनी रीति-रिवाजों, परंपराओं और पूजा पद्धतियों को थोप कर नस्लीय अल्पसंख्यकों को हान-चीनी में विलय करना है।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग की पूर्व टिप्पणियों का हवाला देते हुए प्रोफेसर श्रीकांत ने तिब्बत से संबंधित मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और समर्थन को मजबूत करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय को शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने तिब्बत के आख्यान को व्यापक मान्यता दिलाने के लिए वैश्विक स्तर पर इसका प्रसार करने के महत्व को रेखांकित किया।

उन्होंने तिब्बती अध्ययन अनुसंधान में व्यवधानों पर प्रकाश डाला और कहा कि चीनी कार्यक्रमों पर कम्युनिस्ट पार्टी का कड़ा नियंत्रण है। उन्होंने बताया कि चीन नस्लीय अल्पसंख्यकों के प्रति स्टालिनवादी दृष्टिकोण अपनाता है। तिब्बतियों को एक सरकार-कल्पित 'अनार' मॉडल से जोड़ता है, जो सभी ५५ नस्लीय समूहों को केंद्रीय सत्ता के मातहत कर देता है।

प्रोफेसर श्रीकांत ने तिब्बत नीति संस्थान सहित विद्वानों और संस्थानों से आग्रह किया कि वे तिब्बत के आख्यान को व्यापक मान्यता दिलाने के लिए वैश्विक स्तर पर सतर्क, अनुकूलनशील और सक्रिय रहें।

तिब्बती अध्ययन पर युवा भारतीय विद्वानों का सातवां सम्मेलन ०८ से ०९ अक्तूबर २०२५ तक आयोजित किया गया है। इस दौरान विद्वान भारत-तिब्बत संबंधों, भू-राजनीति, व्यापार संबंधों, इतिहास, तिब्बत के पर्यावरणीय मुद्दों, विदेश नीति और अन्य संबंधित विषयों पर शोध पत्रों सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा करेंगे।

◆ ११. आईटीसीओ और सीजीटीसी-आई ने संयुक्त रूप से कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया और तिब्बत समर्थन समूह के अध्यक्षों की बैठक बुलाई

१४ अक्तूबर, २०२५

नई दिल्ली, १२ अक्टूबर २०२५। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) और भारत में तिब्बती समर्थक समूहों (टीएसजीज) के अध्यक्षों की संयुक्त बैठक नई दिल्ली के ग्रेटर कैलाश स्थित अमारा होटल के कॉन्फ्रेंस हॉल में शुरू हुई। इसमें कुल २९ सम्मानित प्रतिभागियों ने भाग लिया।

बैठक की शुरुआत में औपचारिक रूप से दीप प्रज्जवलित किया गया और परम पावन १४वें दलाई लामा और महात्मा गांधी जी के चित्रों पर माल्यार्पण किया गया। इसके बाद भारत और तिब्बत के बीच एकता, शांति और साझा मूल्यों का प्रतीक भारतीय और तिब्बती राष्ट्रगान गाया गया।

उद्घाटन समारोह के बाद, प्रतिभागियों ने संक्षेप में अपना परिचय दिया। इसमें उन्होंने अपना नाम, अपने संबंधित तिब्बत समर्थन समूह का नाम और अपने प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्र का उल्लेख किया। इसके बाद भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ), नई दिल्ली की कोऑर्डिनेटर सुश्री ताशी देकि ने स्वागत भाषण दिया, जिन्होंने टीएसजी- इंडिया और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) के सभी सदस्यों का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने बैठक के एजेंडे का अवलोकन भी प्रस्तुत किया।

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक श्री आर.के. खिरमे ने अपने परिचयात्मक भाषण में संयुक्त बैठक की पृष्ठभूमि और उद्देश्य, यानी परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना अर्पित करने के बारे में बताया। उन्होंने चुनौतियों, अवसरों और आगे के रास्ते पर भी विस्तार से बात की, जिसमें तिब्बत के मुद्दे के लिए भारत के नैतिक और राजनीतिक समर्थन को मजबूत करने के लिए एकता, प्रभावी समन्वय और नए सिरे से प्रतिबद्धता की आवश्यकता पर जोर दिया।

इसके बाद परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि श्री जिग्मे जुंगने ने भाषण दिया, जिन्होंने परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना अर्पित करने के महत्व और सांस्कृतिक रिवाजों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने समारोह के धार्मिक और अनुष्ठानिक पहलुओं पर जानकारी साझा की, जिसमें अनिवार्य चढ़ावे, बुनियादी बजट अनुमान और इस तरह के आयोजन के लिए संभावित समय-सीमा शामिल है।

समारोह में आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक और राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य श्री डॉ. इंद्रेश कुमार ने बीज भाषण दिया। उन्होंने भारत और तिब्बत के बीच गहरे ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों की फिर से पुष्टि की और इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत के लिए भारत के समर्थन को वैश्विक स्तर पर प्रचारित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह मौजूदा पहल इस एकजुटता के संदेश को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैलाने का एक अवसर है। मुख्य भाषण के बाद, सभी प्रतिभागियों ने सर्वसम्मति से मुख्य प्रस्ताव और एजेंडा को स्वीकार किया, जिसमें परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना सभा का आयोजन भी शामिल था।

संयुक्त बैठक के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव आईटीसीओ- नई दिल्ली की डिप्टी कोऑर्डिनेटर मिगमर सामचो पेश किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया, जिसमें उन्होंने संयुक्त बैठक के हर प्रतिभागियों को बैठक में शामिल होने और दिन के एजेंडा पर सक्रिय रूप से चर्चा करने, साथ ही गहरा समर्थन और योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया। यह बैठक सभी प्रतिभागियों के बीच परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना

सभा के सफल आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता और उम्मीद की भावना के साथ समाप्त हुई। सदस्यों ने तिब्बत के मुद्दे के लिए भारत के लगातार नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समर्थन को और मजबूत करने के प्रति अपने समर्पण को फिर से दोहराया।

– आईटीसीओ, दिल्ली की रिपोर्ट

◆ १२. पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी नामक्यी ने तिब्बत में मानवाधिकारों की बिगड़ती स्थिति पर अमेरिकी कांग्रेस में अपने विचार रखे

१५ अक्तूबर, २०२५

वाशिंगटन डीसी। तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिकी कांग्रेस भवन में 'धार्मिक स्वतंत्रता का दमन: चीन के दमन का मुकाबला' विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन में, तिब्बत की पूर्व राजनीतिक कैदी नामक्यी को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने बताया कि कैसे उन्हें और उनकी उस समय केवल १५ वर्ष की रही बहन को परम पावन दलाई लामा का चित्र प्रदर्शित करके शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन करने के कारण सीपीसी द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। उन्होंने उस अकल्पनीय उत्पीड़न और यातना का वर्णन किया, जो उन्हें और अन्य तिब्बती कैदियों को जेल में सहन करनी पड़ी। सीपीसी द्वारा तिब्बतियों की धार्मिक स्वतंत्रता का घोर दमन, रिहाई के बाद भी तिब्बती राजनीतिक कैदियों को गतिविधि की स्वतंत्रता से वंचित करने के साथ ही उनके रिश्तेदारों और पूरे समुदाय को भी आवाजाही की स्वतंत्रता खत्म करने के कारण गंभीर धमकियों का सामना किए जाने की स्थिति का भी उन्होंने वर्णन किया। साथ ही उन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए अमेरिकी सरकार से निरंतर समर्थन की अपील की।

तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी) के अध्यक्ष तेनचो ग्यात्सो, तिब्बत समर्थक चेमी ल्हामो और तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ शोधकर्ता तेनजिन दोरजी ने इस मुद्दे के विभिन्न पक्षीय विषयों पर प्रस्तुतियां दीं। सम्मेलन में अमेरिकी विदेश विभाग के अधिकारियों, कांग्रेस के कर्मचारियों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों सहित कई प्रतिभागियों ने भाग लिया। आयोजन समिति ने एक संयुक्त वक्तव्य भी जारी किया।

नामक्यी ने प्रतिनिधि सभा की विदेश मामलों की समिति के पूर्व अध्यक्ष, कांग्रेसी माइकल मैककॉल के कार्यालय और मानवाधिकार आयोग के टॉम लैंटोस कार्यालय का दौरा किया, जहां उन्होंने तिब्बत के भीतर लगातार गंभीर और बिगड़ती स्थिति के बारे में जानकारी दी और अमेरिकी सरकार से और अधिक सहयोग की अपील की। उन्होंने ह्यूमन राइट्स वॉच, फ्रीडम हाउस, विक्टिम्स ऑफ कम्युनिज्म मेमोरियल फाउंडेशन और वाइटल वॉयस सहित प्रमुख अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों का भी दौरा किया, जहां उन्होंने इन संस्थानों के शोधकर्ताओं को तिब्बत की गंभीर स्थिति के बारे में बताया। इसके अलावा, समाचार एजेंसी एसोसिएटेड प्रेस (एपी) ने नामक्यी का विशेष साक्षात्कार भी लिया।

-तिब्बत कार्यालय, वाशिंगटन की रिपोर्ट

◆ १३. धर्मशाला में मन की प्रकृति और एआई के वादे और चुनौतियों पर विचार करने के लिए १२० से ज्यादा विशेषज्ञ इकट्ठा हुए

१९ अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। इस हफ्ते धर्मशाला में उनतालीसवां माइंड एंड लाइफ डायलॉग हुआ। १२० से ज्यादा वैज्ञानिक, विद्वान, साधक, बिजनेस लीडर, नीति-निर्माता और अन्य लोग परम पावन दलाई लामा के निवास के नीचे दलाई लामा लाइब्रेरी और आर्काइव बिल्डिंग में इकट्ठा हुए, ताकि मन की प्रकृति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के वादे और चुनौतियों का पता लगाया जा सके। इसमें तिब्बती शिक्षा और सांस्कृतिक संस्थानों के मेहमान भी शामिल हुए।

यह कार्यक्रम माइंड एंड लाइफ इंस्टीट्यूट, माइंड एंड लाइफ यूरोप और दलाई लामा ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया था। ट्रस्ट के सचिव और दलाई लामा लाइब्रेरी और आर्काइव के निदेशक जम्फेल लुंडुप ने इस आयोजन के बारे में परिचय दिया।

उन्होंने घोषणा की कि यह डायलॉग पिछले लगभग चालीस सालों में हुए विभिन्न डायलॉग की तरह ही परम पावन के प्राच्य ज्ञान परंपराओं और पाश्चात्य वैज्ञानिक खोजों के बीच पुल बनाने के विचार से प्रेरित है। इस निमित्त वैश्विक मंच की नींव १९८७ में माइंड एंड लाइफ की पहली बैठक के दौरान रखी गई, जो आज भी मौजूद है। माइंड एंड लाइफ इंस्टीट्यूट ने बौद्ध विद्वानों और न्यूरोसाइंस, फिजिक्स, कॉस्मोलॉजी, बायोलॉजी और ध्यान ज्ञान में विशेषज्ञता वाले वैज्ञानिकों को एक साथ लाया है। इंस्टीट्यूट के माध्यम से मस्तिष्क, मन और नैतिकता के बीच एक संबंध स्थापित किया गया है। इंस्टीट्यूट के कार्यों ने भिक्षुओं और भिक्षुणियों को अपने पारंपरिक पाठ्यक्रम के साथ विज्ञान का अध्ययन करने के लिए भी प्रेरित किया है।

माइंड एंड लाइफ बोर्ड के अध्यक्ष थुप्टेन जिनपा ने अपने शुरुआती भाषण

में बताया कि यह डायलॉग परम पावन दलाई लामा के ९०वीं वर्षगांठ के अवसर पर हो रहा है, जिसे करुणा का वर्ष घोषित किया गया है। उन्होंने सुझाव दिया कि इसे साधना की भेंट के रूप में माना जा सकता है।

उन्होंने याद किया कि पहला शानदार डायलॉग चिली के वैज्ञानिक फ्रांसिस्को वरेला और उद्यमी एडम एंगल ने आयोजित किया था। उन्होंने परम पावन को एक ऐसा मंच दिया, जिस पर वे वैज्ञानिकों को अपने पास लाकर विज्ञान में रुचि विकसित कर सकें। उन्होंने दो खोजी परंपराओं- बौद्ध धर्म और विज्ञान को एक-दूसरे को जानने का अवसर दिया।

जिनपा ने बताया कि जब परम पावन वैज्ञानिकों के साथ जुड़ते हैं, तो उनके दो मुख्य उद्देश्य होते हैं। एक तो वैज्ञानिक शोध-दृष्टि के दायरे को विकसित करना और भौतिक प्रतिमान से आगे बढ़ना। वे कहानी के मन वाले हिस्से पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, जिसमें अनुभव किया गया ध्यान अनुभव भी शामिल है। इस बीच, साइंस ने ब्रेन इमेजिंग के लिए एडवांस्ड टेक्नोलॉजी विकसित कर ली है, जिससे न्यूरोप्लास्टिसिटी को पहचानना मुमकिन हुआ है। माइंड एंड लाइफ इंस्टीट्यूट ने इंसान के अनुभव और चेतना की रिडक्शनिस्ट समझ से परे जांच का दायरा बढ़ाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।

परम पावन का दूसरा मकसद यह देखना है कि विज्ञान इंसानियत की सेवा कैसे कर सकता है। दरअसल, वह इसके लिए करुणा की भावना को बहुत जरूरी मानते हैं।

थुप्टेन जिनपा ने बताया कि वे परम पावन के इस मूल विश्वास से बहुत प्रभावित हैं कि बातचीत के जरिए अंतर्दृष्टि उभर सकती है- यह सच में एक बहुत ही गहरी खोज है। उन्होंने कहा कि पश्चिम में अक्सर अकादमिक बैठकें ज्यादातर मोनोलॉग जैसी होती हैं। वैज्ञानिक अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करते हैं, इसके बाद कुछ सवाल लिये जाते हैं और वैज्ञानिक उनका जवाब देकर बैठ जाते हैं। माइंड एंड लाइफ सामूहिक बातचीत से स्पष्ट समझ पैदा होने की कल्पना करता है। यह लोगों को सामूहिक रूप से सोचने, एक साथ गंभीरता से सोचने के लिए एक जगह बनाता है और इस बातचीत का स्वभाव बहुआयामी होता है।

थुप्टेन जिनपा ने बताया कि वे इस बात से बहुत खुश हैं कि इस साल की बातचीत का विषय 'मन, कृत्रिम बुद्धमत्ता (एआई) और नैतिकता' है। इंसान एआई के साथ कैसे रहेंगे, यह हमारे समय का एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल होने वाला है। उन्होंने देखा कि चर्चा और बहस पर जोर-जोर से बोलकर हावी होने से रोकने के लिए हमें मानवीय ज्ञान के सबसे गहरे, सबसे विविध संसाधनों में उतरना होगा। क्योंकि, मानवता का भविष्य दांव पर है।

उन्होंने आगे कहा कि वह यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि इस संबंध में माइंड एंड लाइफ का 'जादू' कैसे सामने आता है। उन्होंने एआई में अपनी दिलचस्पी मानी, लेकिन इसके शोधपरक न होने के कारण उन्हें यह पक्का नहीं पता कि क्या असली है और क्या सिर्फ प्रचार।

यह बातचीत दो-दो घंटे के छह सत्रों में संपन्न हुई। चार प्रस्तुतकर्ताओं के पैनल में निम्नलिखित फैकल्टी शामिल थे, वे हैं- वाशिंगटन विश्वविद्यालय से एमिली एम. बेंडर, जांगचूब चोएलिंग भिक्षुणी विहार की एनी चोयांग, प्रिंसटन विश्वविद्यालय की मौली क्रॉकेट, मिसिसिपी विश्वविद्यालय से रॉबर्ट कमिंग्स, क्योटो विश्वविद्यालय से मार्क-हेनरी डेरोचे, गूगल डीपमाइंड से जेसन गेब्रियल, मेम्फिस विश्वविद्यालय से शॉन गैलाघर, ईस्ट-वेस्ट सेंटर से पीटर हर्शांक, सेंटर फॉर एआई एंड डिजिटल पॉलिसी से मर्व हिकॉक, माइंड एंड लाइफ इंस्टीट्यूट बोर्ड के अध्यक्ष थुप्टेन जिनपा, ग्युटो मठ से खंगसेर रिनपोछे, हगिंग फेस से साशा लुसियोनी, पादुआ विश्वविद्यालय से चियारा मस्केरेलो, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से केट नेव, यरूशलेम के हिब्रू विश्वविद्यालय की एनाट पेरी, गादेन जांगत्से मठ से गेशे लोदोए सांगपो, इंपीरियल कॉलेज लंदन के गूगल डीपमाइंड से मरे शनाहन, ब्रुसेल्स विश्वविद्यालय से ल्यूक स्टील्स, सेरा जे मठ से गेशे थाबखे और ग्रोनिंगन विश्वविद्यालय से मैरीके वैन वुग्ट।

हर वक्ता को अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए दस मिनट मिले। इसके बाद पैनल के सदस्यों के बीच चर्चा हुई। फिर थोड़े ब्रेक के बाद प्रतिभागियों की ओर से सवाल पूछे गए और उनके जवाब हुए।

गुरुवार १६ अक्तूबर की दोपहर को आखिरी सत्र के दौरान प्रोग्राम प्लानिंग कमेटी के सदस्य और प्रेजेंटर ल्यूक स्टील्स ने मीटिंग के मुख्य विषयों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया। इसमें सबसे पहले सत्र में एआई में दुख कम करने, समानता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने, साथ ही धरती पर खुशहाली लाने की क्षमता पर चर्चा हुई। दूसरे सत्र में एआई से स्वास्थ्य और भलाई, काम, शिक्षा, राजनीति और जलवायु कार्रवाई को होने वाले जोखिमों की पड़ताल की गई। तीसरे सत्र में इस बात पर चर्चा हुई कि इंसान कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में किस तरह की नैतिकता डाली जा सकती हैं और डालनी चाहिए ताकि यह नुकसानदायक असर से बचे और धरती पर सभी की भलाई हो।

इन मुख्य विषयों को पांच सत्रों में विभाजित किया गया था। पहला सत्र मन विषय पर दार्शनिक नजरिए से था। दूसरा सत्र उलझनों को सुलझाने और सकारात्मक रिश्तों के बारे में था। तीसरा सत्र सामूहिक आख्यानों और मुमकिन भविष्य के बारे में था। फिर डायवर्सिटी और नैतिकता को लेकर एक सत्र था और आखिर में एक सत्र शिक्षा को लेकर था

इन सभी सत्रों में चार सवाल उठे। पहला सवाल यह था कि एआई अभी क्या कर रहा है और हम इसके साथ क्या कर सकते हैं? दूसरा सवाल यह था कि इसका इस्तेमाल करने का असर हम पर और समाज पर क्या होगा। ये सवाल एआई के बारे में हैं, जैसा कि वह अभी है। लेकिन प्रस्तोता की दिलचस्पी भविष्य को लेकर भी थी और एक आम भावना थी कि भविष्य इंसानों द्वारा बनाया जा सकता है और बनाया जाना चाहिए। इस मीटिंग ने यह तय करने का एक जरूरी मौका दिया कि एआई भविष्य में क्या कर सकता है और हम वहां तक कैसे पहुंचेंगे।

तो, एआई अभी क्या करता है? चैटबॉट्स के कई उदाहरण थे, लेकिन मीटिंग में ज्यादातर उन एप्लीकेशन पर फोकस किया गया जो इंसान के तौर पर हमारे लिए जरूरी हैं। कई दूसरी कॉन्फ्रेंस में इस बारे में बात हुई है कि एआई डेटा साइंस या डेटा के एनालिसिस वगैरह के लिए क्या कर सकता है। यहां मकसद उन विषयों पर फोकस करना था जो इंसानों से जुड़े हैं।

कुछ चेतावनियां भी थीं। पहली यह कि हमें बड़ी कंपनियों के जनसंपर्क विभाग द्वारा किए गए अतिप्रचार से ज्यादा प्रभावित नहीं होना चाहिए। हमें शांत रहना चाहिए और एआई को समीक्षात्मक नजरिए से देखना चाहिए।

शॉन गैलाघर ने एक बात कही जिसे 'ट्यूरिंग टेस्ट फैलेसी (ट्यूरिंग द्वारा प्रतिपादित परीक्षण भ्रांति)' कहा जा सकता है, कि किसी चीज का नकल बनाने और असल में वैसा होने में बहुत बड़ा फर्क होता है। इसलिए, अगर कोई चैटबॉट कहता है कि 'मुझे तुम्हारे लिए हमदर्दी महसूस होती है', तो ये सिर्फ शब्द हैं और हमें यह मानने की गलती नहीं करनी चाहिए कि उस सिस्टम में हमारे लिए हमदर्दी है या वह हमदर्दी महसूस करता है।

थुबतेन जिनपा ने सलाह दी कि हमें भाषा का इस्तेमाल करते समय सावधान रहना चाहिए। जब हम ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करना शुरू करते हैं जो इंसानी संदर्भ में समझ में आते हैं और उन्हें दूसरी स्थितियों या चीजों पर लागू करते हैं, तो यह एक फिसलन भरी ढलान होती है। मौली क्रॉकेट ने टेक्नो-ऑप्टिमिज्म या इंसानी निराशावाद में न फंसने की बात कही। हमें इन सबमें इंसानों की अहमियत को नहीं भूलना चाहिए। इंसान मौजूदा मशीनों की क्षमता से कहीं ज्यादा हैं और आने वाले समय में भी ऐसा ही रहेगा।

एमिली बेंडर ने बताया कि हमें एआई को इंसानी रूप देने के बारे में कितना सावधान रहना चाहिए, जो हम देखते हैं या जो हमें बताया जाता है, उस पर ज्यादा भरोसा नहीं करना चाहिए।

अब देखना होगा कि इसका क्या असर होता है? बेशक, इसका असर बहुत बड़ा है और आगे भी ऐसा ही होने वाला है। जिनपा ने एक नई सच्चाई बनाने की बात की। एक नई सच्चाई, जिसका हम हिस्सा बन जाते हैं, चाहे हम चाहें या न चाहें। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम एआई द्वारा बनाए जा रहे थिएटर में खेलने के लिए कितनी दूर तक जाने को तैयार हैं। यह बात कही गई है कि जब कुछ टेक्स्ट पाने वाले या कुछ चैटबॉट वगैरह इस्तेमाल करने वाले लोगों को पता चलता है कि वे एआई से डील कर रहे हैं, तो उनका रवैया बदल जाता है। इस बात पर ध्यान देना जरूरी है।

प्रस्तोतागण और प्रतिभागी वर्ग खासकर बच्चों और युवाओं पर एआई के असर को लेकर चिंतित थे। एआई दुनिया में आ गया है, लेकिन हमें नहीं पता कि मानसिक विकास पर इसका क्या असर होगा। इस पर ज्यादा रिसर्च नहीं हुई है। हम सब केवल प्रयोग में उपयोग होने वाली सामग्री (गिनी पिग) की तरह हैं। हमें अपने बच्चों और पोते-पोतियों के मामले में बहुत ज्यादा सावधानी बरतनी चाहिए।

साशा लुसियोनी ने रिसोर्स के इस्तेमाल की ओर ध्यान दिलाया, जो एक और बड़ी समस्या है। जब हर कोई ईंधन बचाने की कोशिश कर रहा था, तब एक ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित की गई, जिसने उन सभी कोशिशों को पूरी तरह से बेकार कर दिया।

एआई के संभावित भविष्य के बारे में ल्यूक स्टील्स ने कहा कि उन्होंने एक शब्द बहुत सुना है, वह है करुणा, जिसके लिए कोशिश करनी चाहिए। एक और जरूरी शब्द आया जिम्मेदारी। सत्ता के साथ जिम्मेदारी भी आती है। इस बात पर सहमति बनी कि ज्यादा पारदर्शिता होनी चाहिए, मूल्यों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए और शिक्षकों को ज्यादा अधिकार मिलनी चाहिए। गेशे लोदोए सांगपो ने सलाह दी कि हमें जुड़ने के लिए एआई का इस्तेमाल करना चाहिए, बचने के लिए नहीं। उन्होंने कहा कि एआई प्यार नहीं कर सकता, लेकिन यह हमें बेहतर प्यार करने में मदद कर सकता है। एआई का इस्तेमाल बदलाव और अंदरूनी विकास लाने के लिए किया जाना चाहिए, न कि टकराव के लिए। इसे ध्यान में रखते हुए हम भविष्य को मिलकर बना सकते हैं। लेकिन ऐसा करने के लिए हमें सक्रिय होना होगा।

जब माइंड एंड लाइफ इंस्टीट्यूट और माइंड एंड लाइफ यूरोप के प्रस्तोता और मेहमान आज परम पावन से मिले तो उन्होंने उनसे कहा, 'अगर हम इस तरह के डायलॉग्स समय-समय पर आयोजित करते रहें, तो बहुत अच्छा होगा। बौद्ध सिद्धांतों के अनुसार भी इस तरह के डायलॉग्स में शामिल होना रीति-रिवाज पालन करने के बनिस्पत बहुत मददगार है। अगर हालात स्थिर रहते हैं, तो माइंड एंड लाइफ डायलॉग भविष्य में भी जारी रह सकता है।

उन्होंने आगे कहा, 'जहां तक मेरी बात है, मैंने दार्शनिक परंपरा में पढ़ाई की और जब मैं ल्हासा में था तो बहस का अभ्यास किया, जिसमें मैंने चुनौतीपूर्ण और जवाब देने वाले दोनों तरह के नजरिए अपनाए। जब हम पढ़ाई करते हैं, तो हम अपने दिमाग का इस्तेमाल कर रहे होते हैं। जब मैं पढ़ रहा था तो मैंने भी अपने दिमाग का इस्तेमाल किया। बेशक, जब मैं बच्चा था और पढ़ता था तो उसमें डर भी शामिल था, क्योंकि मुझे डर था कि मेरे शिक्षक मुझे सजा दे सकते हैं।

'वैज्ञानिक हमारी बौद्ध परंपराओं में शामिल तर्क, ज्ञान-मीमांसा और आलोचनात्मक चिंतन का फायदा उठा सकते हैं। वे उनसे फायदा उठा सकते हैं।

'आजकल मैं हर सुबह उठकर बोधिचित्त का जागृत मन पैदा करता हूं, यह प्रार्थना करता हूं कि जो लोग मुझ पर भरोसा करते हैं, वे सब ठीक रहें। मेरी जिंदगी पूरी तरह से दूसरों की भलाई के लिए समर्पित है।

'मैं एक धार्मिक भिक्षु हूं और चीवर धारण करता हूं, लेकिन जब मैं बात करता हूं, तो मैं अक्सर विज्ञान का जिक्र करता हूं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हम जो आलोचनात्मक चिंतन करते हैं, वह वैज्ञानिक सोच के अनुकूल है।

'जिस क्षण हम अपनी मां के पेट से जन्म लेते हैं, हमारा अपना अलग अनुभव होता है। हमारे अंदर चेतना से जुड़ी भावनाएं होती हैं। इसलिए, यह समझना जरूरी है कि मन कैसे काम करता है, क्योंकि जीवन मन पर ही टिका हुआ है।'

◆ १४. 'थेरवाद और महायान' डॉयलॉग पर कॉन्फ्रेंस की पांचवीं शृंखला नई दिल्ली में

१६ अक्तूबर, २०२५

नई दिल्ली। ११ अक्तूबर २०२५ को, नई दिल्ली में परम पावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केंद्र- तिब्बत हाउस- ने थेरवाद और महायान दार्शनिक परंपराओं पर डॉयलॉग की पांचवीं सीरीज का सफल आयोजन किया। इसमें विचार के बिंदु थे- 'ज्ञानमीमांसा संबंधी मुद्दे और दार्शनिक परंपराओं से प्रतिक्रियाएं : क्या सच है और उसका मूल्यांकन कौन करता है?' यह कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित की गई, जिसमें विद्वानों, शिक्षाविदों, छात्रों और आध्यात्मिक साधकों सहित कई तरह के लोग शामिल हुए।

यह कार्यक्रम परम पावन दलाई लामा (घोटन) के ९०वें जन्मदिन से साल भर चलने वाले समारोह का हिस्सा था। परम पावन के ९०वें जन्मदिन पर पूरे वर्ष को 'करुणा वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है।

इस कॉन्फ्रेंस में भारत के सर्वाधिक सम्मानित बुद्धिजीवी और आध्यात्मिक शिक्षक शामिल हुए, जिनमें मुख्य अतिथि के तौर पर पूर्व प्रो वाइस चांसलर और दिल्ली विश्वविद्यालय में फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के पूर्व प्रमुख और डीन प्रो. विवेक सुनेजा शामिल थे।

सम्मानित अतिथियों में सारा, धर्मशाला में कॉलेज फॉर हायर तिब्बती स्टडीज के प्रिंसिपल पासंग शेरिंग और भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय में नव नालंदा महाविहार के वाइस चांसलर प्रो. सिद्धार्थ सिंह शामिल थे। प्रो. सिंह ने पाली परंपरा पर बीज भाषण भी दिया, जिसमें ज्ञान, वास्तविकता और मूल्यांकन पर थेरवाद के दृष्टिकोण के बारे में गहरी जानकारी दी। संस्कृत परंपरा से मुख्य भाषण तिब्बत हाउस के निदेशक, आदरणीय गेशे दोरजी दमदुल ला ने दिया, जिन्होंने ज्ञान-मीमांसा की महायान व्याख्या को बहुत अच्छे से प्रस्तुत किया।

दिन भर चली इस कॉन्फ्रेंस में प्रतिष्ठित पैनलों द्वारा विद्वानों की प्रस्तुतियों की एक शानदार शृंखला पेश की गई। मुख्य व्याख्यानों के अलावा, दिल्ली भर के विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा एक पैनल चर्चा ने खोजे गए विषयों पर एक युवा और गतिशील दृष्टिकोण प्रदान किया।

इस कॉन्फ्रेंस में लगभग १०० प्रतिभागियों ने भाग लिया और कई और लोगों ने यूट्यूब लाइवस्ट्रीम के माध्यम से ऑनलाइन भाग लिया, कॉन्फ्रेंस का समापन बहुत अच्छे से हुआ।

- सीटीए के धर्म और संस्कृति विभाग की रिपोर्ट

◆ १५. सेंट्रल टीबी डिवीजन की मेडिकल टीम ने स्वास्थ्य विभाग का दौरा किया

१६ अक्तूबर, २०२५

धर्मशाला। भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के सेंट्रल टीबी डिवीजन के डॉक्टरों की एक टीम और पांच सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल ने १४ अक्तूबर २०२५ को कांगड़ा के चीफ मेडिकल ऑफिसर की पहल पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के स्वास्थ्य विभाग (टीवीएचए) का दौरा किया। इसके बाद उन्होंने तिब्बत म्यूजियम, निर्वासित तिब्बती संसद और डेलेक हॉस्पिटल का भी दौरा किया।

इस महत्वपूर्ण दौरे से आपसी संबंध मजबूत होने और हेल्थकेयर के क्षेत्र में, खासकर ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) की रोकथाम और देखभाल में भविष्य में मदद मिलने की उम्मीद है। यह वैचारिक आदान-प्रदान तिब्बती समुदाय में स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने और लोगों की जान बचाने की साझा प्रतिबद्धता को दिखाती है।

- सीटीए के स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट

◆ १६. संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने वियतनामी हिरासत में तिब्बती लामा तुल्कु हुंगकर दोरजे रिनपोछे की मौत पर चिंता जताई

०९ अक्तूबर, २०२५

जिनेवा, ०८ अक्तूबर २०२५। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार विशेषज्ञों के एक समूह ने प्रमुख तिब्बती आध्यात्मिक भिक्षु तुल्कु हुंगकर दोरजे रिनपोछे की गिरफ्तारी, जबरन गायब होने और हिरासत में मौत पर गहरी चिंता व्यक्त की है। हुंगकर की कथित तौर पर २८ मार्च २०२५ को वियतनाम में हिरासत में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। हुंगकर को गोलोग रिनपोछे के नाम से भी जाना जाता है।

दो अलग-अलग ऑनलाइन पत्रों- वियतनाम सरकार को एएल वीएनएम ४/२०२५ और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की सरकार को एएल सीएचएन १५/२०२५- में मनमानी हिरासत के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कार्य समूह, जबरन या अनैच्छिक गायब होने पर कार्य समूह, गैर-न्यायिक, संक्षिप्त या मनमानी हत्याओं पर विशेष प्रतिवेदक और अल्पसंख्यक मुद्दों पर विशेष प्रतिवेदक ने मामले में तत्काल स्पष्टीकरण और एक स्वतंत्र जांच की मांग की है।

०८ अगस्त २०२५ की तारीख वाले संचार पत्र के अनुसार, तुल्कु हुंगकर दोरजे रिनपोछे को शुरू में अगस्त २०२४ में चीनी अधिकारियों द्वारा किंघई में अज्ञात कारणों से हिरासत में लिया गया था। माना जाता है कि हुंगकर द्वारा चीनी-नियुक्त पंचेन लामा के उनके स्थान पर आगमन पर 'गर्मजोशी से स्वागत' समारोह आयोजित करने से इनकार करने और परम पावन १४वें दलाई लामा के प्रति अपनी आध्यात्मिक निष्ठा बनाए रखने के कारण

उन्हें हिरासत में लिया गया। बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया और माना जाता है कि वे सितंबर २०२४ में वियतनाम चले गए थे।

२५ मार्च २०२५ को रिनपोछे को कथित तौर पर हो ची मिन्ह सिटी में वियतनामी पुलिस ने उन व्यक्तियों की उपस्थिति में गिरफ्तार किया था, जिनके बारे में माना जाता है कि वे चीनी अधिकारी थे। चार दिनों तक उनके ठिकाने का पता नहीं चला। २९ मार्च को वियतनामी अधिकारियों ने घोषणा की कि उनकी दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई है। हालांकि, पहले से उन्हें दिल की बीमारी का कोई रिकॉर्ड नहीं था। कथित तौर पर २० अप्रैल २०२५ को उनके परिवार की सहमति के बिना साक्या वियतनाम मंदिर में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया और उनकी राख बाद में तिब्बत में उनके मठ को लौटा दी गई।

संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने कहा कि घटनाओं का क्रम 'मनमाने ढंग से जीने के अधिकार से वंचित करना, स्वतंत्रता और सुरक्षा के अधिकार का उल्लंघन और जबरन गायब होने पर रोक के संबंध में गंभीर चिंताएं पैदा करता है।' उन्होंने दोनों सरकारों से इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स स्टैंडर्ड्स के मुताबिक, जिसमें संभावित गैर-कानूनी मौत की जांच पर मिनेसोटा प्रोटोकॉल (२०१६) भी शामिल है, एक स्वतंत्र, तुरंत और पारदर्शी जांच सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

विशेषज्ञों ने चीन और वियतनाम दोनों को इंटरनेशनल कोवेनेंट ऑन सिविल एंड पॉलिटिकल राइट्स (आईसीसीपीआर) के तहत उनकी जिम्मेदारियों की भी याद दिलाई और इस बात पर जोर दिया कि 'हिरासत में मौत होने पर तब तक यह माना जाएगा कि राज्य ने मनमाने ढंग से जीवन का हरण किया है, जब तक कि सही जांच से यह गलत साबित न हो जाए।'

इस संचार में दोनों सरकारों से रिनपोछे की गिरफ्तारी, हिरासत, मौत के कारण और अंतिम संस्कार के बारे में विस्तृत स्पष्टीकरण देने के साथ-साथ चीनी और वियतनामी अधिकारियों के बीच किसी भी सहयोग के बारे में भी स्पष्टीकरण मांगा गया है।

संयुक्त राष्ट्र के संचार-पत्र पर प्रतिक्रिया देते हुए जिनेवा में तिब्बत कार्यालय की प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने विशेष प्रतिवेदकों और कार्य समूहों के हस्तक्षेप की सराहना की।

प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने कहा, 'हम तुल्कु हुंगकर दोरजे रिनपोछे की दुखद और संदिग्ध मौत पर दुनिया का ध्यान दिलाने के लिए संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदकों और कार्य समूह का तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हैं। दोनों सरकारों को तुरंत सच्चाई बतानी चाहिए और विश्वसनीय, स्वतंत्र जांच करनी चाहिए।'

उन्होंने रिनपोछे की हिरासत, गायब होने और मौत में कथित भूमिका के लिए चीनी अधिकारियों की कड़ी आलोचना भी की और कहा, 'तुल्कु हुंगकर दोरजे रिनपोछे की मनमानी गिरफ्तारी, जबरन गायब होना और हिरासत में मौत मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन है। तिब्बती धार्मिक नेताओं के जीवन में चीन का बार-बार दखल देना अस्वीकार्य है। उनकी मौत के लिए न्याय मिलना जरूरी है और जो लोग इसके लिए जिम्मेदार हैं, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।'

-तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

◆ १७. यूरोपीय संसद ने ४२वीं ईयू-चीन अंतर संसदीय बैठक में पंचेन लामा की बिना शर्त रिहाई की मांग की

१७ अक्तूबर, २०२५

ब्रुसेल्स, १५ अक्तूबर २०२५। ४२वीं ईयू-चीन अंतर संसदीय बैठक (आईपीएम) के दौरान, यूरोपीय संसद ने पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत में मानवाधिकारों से जुड़ी कई गंभीर चिंताओं को उठाया। इनमें, चीन के बिगड़ते मानवाधिकार रिकॉर्ड की व्यापक आलोचना के हिस्से के तौर पर तिब्बत की स्थिति प्रमुखता से शामिल थी।

यूरोपीय संसद ने ११वें पंचेन लामा, गेधुन चोएक्यी न्यिमा के नियति के बारे में अपनी पुरानी चिंता को दोहराया, जिन्हें १९९५ में छह साल की उम्र में चीनी अधिकारियों ने अगवा कर लिया था। यूरोपीय संसद के सदस्यों ने इलम तोहती, जिमी लाई और गुई मिन्हाई सहित अन्य व्यक्तिगत मामलों के साथ-साथ उनकी बिना शर्त रिहाई की अपनी मांग दोहराई।

४२वीं आईपीएम २०१८ से ठीक सात साल बाद पहली बैठक थी। चीन ने शुरू में २०२१ में यूरोपीन संसद के पांच सदस्यों और संसद की मानवाधिकारों पर उपसमिति पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिससे राजनयिक संबंध रुक गए थे। यह बातचीत तब फिर से शुरू हुई जब चीनी सरकार ने इस साल मार्च में एकतरफा रूप से प्रतिबंध हटा दिए।

आईपीएम से पहले, ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय और इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत ने ईयू सांसदों से सक्रिय रूप से संपर्क किया और उनसे आईपीएम के दौरान चीनी प्रतिनिधियों के साथ तिब्बत में मानवाधिकारों की स्थिति का मुद्दा उठाने का आग्रह किया।

आईपीएम बैठक के दिन इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत और स्थानीय तिब्बती संगठनों ने संयुक्त रूप से यूरोपीय संसद के पास तिब्बत की आजादी की मांग करते हुए विरोध- प्रदर्शन किया।

- ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय की रिपोर्ट

◆ १८. मठ से मशीन तक: तिब्बती आस्था और पहचान पर चीन का सांस्कृतिक हमला

०८ अक्तूबर, २०२५

तिब्बत सिर्फ एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है- यह एक जीवित संस्कृति का मुद्दा है, जो आज शिकंजे में है। तिब्बती बौद्ध धर्म में चीन का दखल सांस्कृतिक संहार के लिए जान-बूझकर किया गया प्रयास है। इसका उदाहरण चीन सरकार द्वारा अपने पंचेन लामा की नियुक्ति और राजनीतिक फायदे के लिए पवित्र समारोहों को तोड़-मरोड़ कर पेश करना है।

-राहुल सिन्हा, जी न्यूज

हिमालय की गोद में बसे तिब्बत की सदियों पुरानी आध्यात्मिक परंपरा को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा व्यवस्थित रूप से खत्म किया जा रहा है। 'नस्लीय आत्मसातीकरण' और 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण' के बैनर तले बीजिंग तिब्बती बौद्ध धर्म के खिलाफ टैंकों से नहीं, बल्कि राजनीतिक हेराफेरी, धार्मिक हस्तक्षेप और सांस्कृतिक संहार के माध्यम से शीत युद्ध लड़ रहा है। अब, इस घोषणा के साथ कि चीन द्वारा नियुक्त 'पंचेन लामा' ग्यालत्सेन नोरबू २०२५ में ताशी ल्हुनपो मठ में पवित्र कालचक्र अभिषेक करेंगे, सीसीपी प्रचार के लिए परम आध्यात्मिक अनुष्ठान को अपनाने और उसे अपने अनुकूल करने के लिए एक और सोची-समझी चाल चल रहा है। यह धार्मिक श्रद्धा नहीं है, यह एक नास्तिक शासन द्वारा मंचित राज्य का नाटक है, जिसने असली पंचेन लामा का अपहरण कर लिया है, तिब्बती पहचान को दबा दिया है और आस्था को वैचारिक नियंत्रण के एक उपकरण के रूप में फिर से पेश किया है। तिब्बत में जो हो रहा है, वह सिर्फ धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक संकट है, जिस पर तत्काल वैश्विक ध्यान देने की आवश्यकता है।

ग्यालत्सेन नोरबू की नियुक्ति ही तिब्बती धर्म में राजनीतिक हस्तक्षेप का एक ज्वलंत प्रतीक है। १९९५ में १४वें दलाई लामा द्वारा छह साल के तिब्बती बच्चे- गेधुन चोएक्यी न्यिमा को ११वें पंचेन लामा के रूप में सार्वजनिक रूप से मान्यता देने के ठीक तीन दिन बाद बच्चे को उसके परिवार के साथ चीनी अधिकारियों ने अगवा कर लिया था। तब से उन्हें सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया है, जिससे वह दुनिया के सबसे लंबे समय तक हिरासत में रखे गए राजनीतिक कैदियों में से एक बन गए हैं। असली पंचेन लामा की जगह चीन ने अपना पंचेन लामा थोप दिया, जिसे आध्यात्मिक तरीकों से नहीं बल्कि कम्युनिस्ट फरमान से चुना गया। पार्टी के यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट द्वारा नियंत्रित और तैयार किए गए ग्यालत्सेन नोरबू को भारी निगरानी में तिब्बत में घुमाया जाता है, जिसका काम लोगों की आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करना नहीं, बल्कि पार्टी के प्रति वफादारी फैलाना है। धार्मिक लोगों पर नियंत्रण करने पर बीजिंग का जोर तिब्बत की विरासतों का चीनीकरण करने के उसके बड़े अभियान को दर्शाता है, जिसमें तिब्बती पहचान को जबरदस्ती बहुसंख्यक हान-चीनी संस्कृति और कम्युनिस्ट विचारधारा द्वारा आत्मसात किया जा रहा है। राष्ट्रीय एकता के नाम पर, मठों में आध्यात्मिक मूर्तियों की जगह चीनी नेताओं की तस्वीरें लगाना जरूरी कर दिया गया है। भिक्षुओं और भिक्षुणियों को कथित 'देशभक्ति की शिक्षा' दी जाती है और तिब्बती पवित्र ग्रंथों का तेजी से मंदारिन में अनुवाद किया जा रहा है, ताकि मूल भाषा और पहचान को खत्म किया जा सके। बच्चों को भी नहीं बख्शा जा रहा है। कई बच्चों को उनके परिवारों से अलग करके सरकारी बोर्डिंग स्कूलों में भेज दिया जाता है, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक जड़ों से कट जाते हैं।

पारंपरिक रूप से आदरणीय लामाओं द्वारा अनुयायियों को ज्ञान के मार्ग पर निर्देशित करने के लिए दिया जाने वाला पवित्र कालचक्र अभिषेक चीनी प्रचार के एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। पार्टी द्वारा नियुक्त पंचेन लामा द्वारा आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम साफ तौर पर 'कम्युनिस्ट पार्टी की समृद्धि' और 'चीनी राष्ट्र की एकता' को समर्पित है।

यह पहली बार नहीं है जब तिब्बती रीति-रिवाजों का गलत इस्तेमाल किया गया है। भारी सरकारी दखल के तहत २०१६ में इसी तरह का एक कालचक्र आयोजित किया गया था, जिसमें तिब्बतियों को मजबूर कर या पैसे देकर शामिल कराया गया। चीनी मीडिया ने इसे ६० सालों में सबसे महत्वपूर्ण कालचक्र घोषित किया और मनगढ़ंत कहानियों में इंद्रधनुष और दिव्य बादलों जैसे चमत्कारी संकेतों के दिखने का दावा किया, ताकि एक ऐसे भिक्षु को आध्यात्मिक वैधता दी जा सके, जिसे तिब्बती लोग बड़े पैमाने पर अस्वीकार करते हैं।

अपने नियंत्रण को मजबूत करने के लिए चीनी सरकार धार्मिक इतिहास में हेराफेरी करती है। शाही युग की स्वर्ण कलश प्रणाली, जो किंग राजवंश की एक लॉटरी पद्धति थी, का हवाला देते हुए पुनर्जन्म लेने वाले लामाओं को चुनने का औचित्य बताती है। यह एक ऐसा कदम है, जो तिब्बती आध्यात्मिक परंपराओं को बुरी तरह से विकृत करता है। यह धार्मिक शासन नहीं है, यह एक ऐसा शासन है जो पवित्र मान्यताओं को राज्य द्वारा स्वीकृत नाटक से बदलने की कोशिश कर रहा है।

इस बीच, असली ११वें पंचेन लामा- गेधुन चोएक्यी न्यिमा, लगभग तीन दशकों से गायब हैं। वैश्विक विरोध और उनके कुशल होने के सबूत की बार-बार मांगों के बावजूद चीन केवल ऐसे दावे करता है, जिनकी पुष्टि नहीं की जा सकती कि वह 'स्नातक कर चुके हैं और सामान्य जीवन जी रहे हैं'। चीन पंचेन लामा से मिलने, उनके बारे में आश्वस्त होने देने से इनकार करता है। उनका लगातार गायब रहना न केवल एक मानवीय त्रासदी है, बल्कि यह चीन के वैश्विक मानवाधिकार रिकॉर्ड पर स्थायी धब्बा भी है।तिब्बती बौद्ध धर्म पर हावी होने का सीसीपी का प्रयास केवल पंचेन लामा तक ही सीमित नहीं है। चीन ने यह साफ कर दिया है कि वह अगले दलाई लामा का चयन भी करेगा, जो सदियों पुरानी तिब्बती धार्मिक प्रथा और दलाई लामा की अपने उत्तराधिकारी को स्वतंत्र रूप से चुनने की अपनी इच्छा को खुले तौर पर खारिज करता है। आध्यात्मिक नेतृत्व का यह पूर्व-खाली अपहरण भविष्य के प्रतिरोध को खत्म करने और तिब्बती मुद्दे को भीतर से खत्म करने का बीजिंग का सोचा-समझा प्रयास है।

'नस्लीय एकता' और 'राष्ट्रीय सद्भाव' के पर्दे के पीछे सांस्कृतिक संहार का एक क्रूर अभियान चल रहा है। तिब्बती भाषा, पहनावा, रीति-रिवाज और आस्था को व्यवस्थित रूप से नष्ट किया जा रहा है। ताशी ल्हुन्पो जैसे मठ अब आध्यात्मिक शिक्षा के अभयारण्य नहीं रहे, बल्कि राज्य-नियंत्रित चौकियां बन गए हैं, जहां चुप्पी थोपी जाती है, भक्ति पर पुलिस का पहरा रहता है और धार्मिक अनुष्ठान कम्युनिस्ट पार्टी की सेवा में खोखले समारोहों तक सीमित कर दिए गए हैं। यहां तक कि धार्मिक आयोजनों के दौरान भी, तिब्बतियों को पार्टी अधिकारियों द्वारा जारी किए गए भारी निगरानी, मनमाने प्रतिबंधों और सख्त व्यवहार संहिता का सामना करना पड़ता है।

हालांकि, इस मुद्दे पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी चुप नहीं रहा है। सरकारों, मानवाधिकार संगठनों और निर्वासन में चल रहे तिब्बती संस्थानों ने बार-बार चीन के धार्मिक उत्पीड़न, पंचेन लामा के अपहरण रखने और तिब्बती सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अपराधीकरण की निंदा की है। फिर भी बीजिंग इन अपीलों को नजरअंदाज कर रहा है। उसे भरोसा है कि वह जबरदस्ती, प्रोपेगेंडा और सैनिक बूटों से तिब्बती आख्यान को दबा सकता है और मनमाने तरीके से दोबारा लिख सकता है।

तिब्बत सिर्फ एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है- यह एक जिंदा संस्कृति है जो खतरे में है। तिब्बती बौद्ध धर्म में चीन का दखल सांस्कृतिक संहार का एक जान-बूझकर किया गया काम है। इसका उदाहरण सरकार द्वारा थोपे गए पंचेन लामा की नियुक्ति और राजनीतिक फायदे के लिए पवित्र समारोहों को तोड़-मरोड़कर पेश करना है। यह सिर्फ तिब्बती लोगों पर ही हमला नहीं है, बल्कि उनकी पहचान, आस्था और इतिहास पर हमला है। दुनिया को इससे मुंह नहीं मोड़ना चाहिए। तिब्बत के संघर्ष की सच्चाई बताई जानी चाहिए और जो लोग इसके लगातार उत्पीड़न के लिए जिम्मेदार हैं, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। वह भी कल नहीं, अभी।

◆ १९. चीन ने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के बाहर सबसे बड़े मठ में दलाई लामा की तस्वीरों पर छापा मारा

२३ अक्तूबर, २०२५

-तिब्बती रिव्यू, २३ अक्तूबर २०२५

(TibetanReview.net, Oct२२'२५)

तिब्बती भाषा की वेबसाइट www.tibettimes.org ने २१ अक्तूबर को 'भरोसेमंद जानकारी' का हवाला देते हुए जानकारी दी है कि चीनी अधिकारियों ने हाल ही में गांसु प्रांत के सांगचू (चीनी: शियाहे) काउंटी में सबसे बड़े तिब्बती बौद्ध मठ और आसपास के धार्मिक स्थलों और गांवों में तिब्बत के निर्वासित आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा की तस्वीरें जब्त करने के खास मकसद से अचानक छापा मारा। बताया गया है कि छापा मारने वाले अधिकारी सिर्फ एक गांव से ही चार बड़े बैग सामान जब्त करके ले गए।

बताया गया है कि यह छापा चीन सरकार के तीन तिब्बती अधिकारियों ने मारा, जो १६ अक्तूबर को लाब्रांग ताशी ख्यिल मठ पहुंचे थे। उन्होंने मठ के साथ-साथ आसपास के इलाकों में अन्य धार्मिक स्थलों और घरों में भी तलाशी ली, जिसमें थांगनाग, न्गोनचाग, लएड्रग, सांगखोग और मार्टेंग गांव शामिल थे।

बताया गया है कि यह छापा चार दिनों तक चला, जिसमें घर-घर जाकर तलाशी ली गई। बताया गया है कि मार्टेंग गांव में तलाशी खास तौर पर सख्त थी, जहां से तलाशी लेने वाले अधिकारियों ने अकेले दलाई लामा की जब्त की गई तस्वीरों के चार बड़े बैग उठाए, जिनमें से सिर्फ चौथा बैग ही कुछ खाली था।

अधिकारियों ने भिक्षुओं और गांव वालों से कहा कि दलाई लामा की कोई भी तस्वीर रखना गैर-कानूनी है और वे स्थानीय और केंद्रीय- दोनों सरकारों के अधिकारियों के आदेश पर काम कर रहे हैं। अधिकारियों ने उन लोगों की तारीफ की, जिनके पास से कोई तस्वीर नहीं मिली, हालांकि उनमें से कुछ लोग शायद समय रहते दलाई लामा की तस्वीरें छिपाने में कामयाब रहे होंगे।

बताया गया है कि १९ अक्तूबर से इलाके के कम्युनिकेशन लिंक काट दिए गए थे, जिससे यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि छापे के दौरान और बाद में लोगों को गिरफ्तार किया गया या कोई हिंसा हुई। रिपोर्ट में कहा गया है कि उस समय तक ऐसी किसी घटना की जानकारी नहीं थी। हालांकि, बर्बर तरीके से चलाए गए तलाशी अभियान ने कई लोगों को मजबूर कर दिया और उन्होंने अपना सामान सौंप दिया।

लाब्रांग मठ जे. लामा सोंगखापा द्वारा स्थापित तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग स्कूल के छह महान मठों में से एक है। यह मठ ऐतिहासिक रूप से तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के बाहर भिक्षुओं की आबादी के मामले में सबसे बड़ा है। यह मठ पारंपरिक तिब्बती प्रांत अमदो के कानल्हो (गानन) प्रीफेक्चर के सांगचू काउंटी के लाब्रांग शहर में स्थित है। लाब्रांग शहर अब चीन के गांसू प्रांत का हिस्सा है।

◆ २०. आत्मदाह करने वाली तिब्बती शहीद की याद- तेनजिन वांग्मो

१७ अक्तूबर, २०२५

याद की गई शहीद : तेनजिन वांग्मो

१७ अक्तूबर २०११ को तिब्बत के न्गाबा में मामे डेचेन चोखोरलिंग भिक्षुणी विहार की २० साल की तिब्बती बौद्ध भिक्षुणी तेनजिन वांग्मो ने विरोध में आत्मदाह कर लिया। उन्होंने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। मृत्यु को प्राप्त करते समय भी वह तिब्बत की आजादी और परम पावन दलाई लामा की तिब्बत वापसी की मांग करते हुए नारे लगा रही थीं।

चीनी अधिकारियों ने गुपचुप तरीके से तुरंत उसी दिन उनके शव का अंतिम संस्कार करने का आदेश दिया, जिससे इस घटना की जानकारी लोगों तक न पहुंचे। न्गाबा के लोग वांग्मो की शहादत के प्रति एकजुटता दिखाने के लिए सड़कों पर जमा हुए और प्रार्थनाएं कीं और उपवास रखा। लेकिन, चीनी सशस्त्र पुलिस और सेना के जवानों ने जबरदस्ती भीड़ को तितर-बितर कर दिया।

तिब्बती लोगों की जायज शिकायतों पर ध्यान देने या इस तरह के विरोध की गंभीरता को समझने के बजाय, अधिकारियों ने स्थानीय नेताओं और परिवार के सदस्यों को धमकियां दीं, उन्हें किसी भी और प्रदर्शन के लिए 'पूरी तरह से जिम्मेदार' ठहराया और उनके खिलाफ सजा देने वाले कदम उठाए। सरकार की यह कार्रवाई तिब्बती राजनीतिक अभिव्यक्ति पर चीनी सरकार के सुनियोजित दमन, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, गरिमापूर्ण और सम्मानजनक जीवन के लिए तिब्बती आकांक्षाओं के साथ ठोस रूप से जुड़ने से इनकार करने का नतीजा रही है।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षो से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

October, 2025, Years: 46 Issue: 10 Regd No. : RNI 34636-79

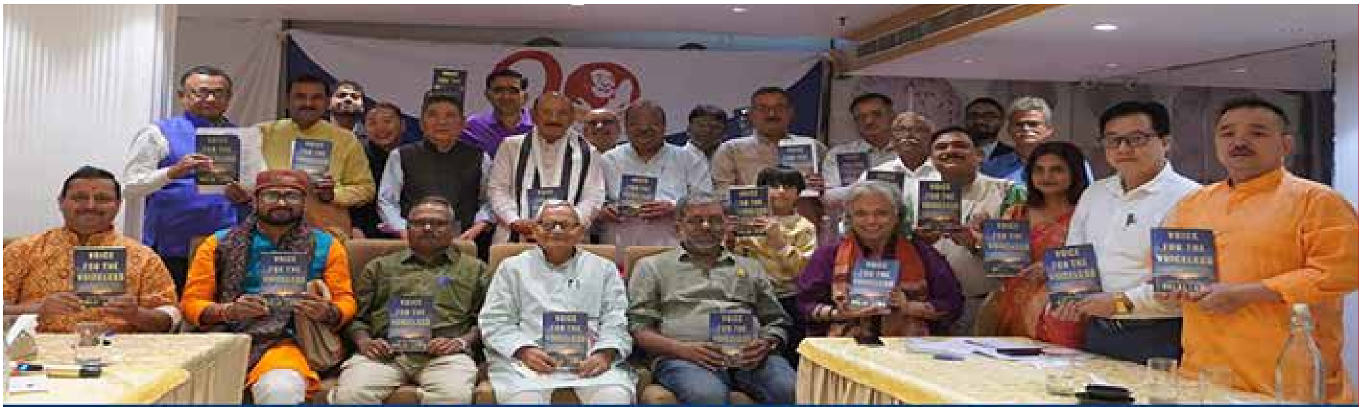

JOINT MEETING

Members of the Core Group for Tibetan Cause - India
The Presidents, Tibet Support Groups in India

आईटीसीओ और सीजीटीसी-आई ने संयुक्त रूप से कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया और तिब्बत समर्थन समूह के अध्यक्षों की बैठक बुलाई

पंचेन लामा की बिना शर्त रिहाई की मांग

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने 29वें फोरम 2000 के दूसरे दिन भाग लिया